अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परियोजना

के अंतर्गत

संगीत नाटक अकादेमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

वर्ष 2014-15 के लिए

स्वीकृत परियोजना :

बिहार के लोकवाद्य-रसनचौकी का आंकड़ा सृजन व सूचिकरण

अंतिम प्रगति प्रतिवेदन

(Final Report)

आकडा संकलनकर्ता व शोधार्थी –

अजित कुमार झा

ग्राम+पोस्ट – भटसिमर

ज़िला – मधुबनी

बिहार 847235

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परियोजना

के अंतर्गत

संगीत नाटक अकादेमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

वर्ष 2014-15 के लिए

स्वीकृत परियोजना :

बिहार के लोकवाद्य-रसनचौकी का आंकड़ा सृजन व सूचिकरण

अंतिम प्रगति प्रतिवेदन

(Final Report)

आकडा संकलनकर्ता व शोधार्थी –

अजित कुमार झा

ग्राम+पोस्ट – भटसिमर

ज़िला – मधुबनी

बिहार 847235

परियोजना :

बिहार के लोकवाद्य-रसनचौकी का आंकड़ा सृजन व सूचिकरण

भाग एक :

परियोजना का प्रपत्र

संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi
NATIONAL ACADEMY OF MUSIC, DANCE AND DRAMA
an autonomous body of the Ministry of Culture, Government of India
RABINDRA BHAVAN, FEROZE SHAH ROAD, NEW DELHI-110 001

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1- प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य -

मिथिला क्षेत्र, उत्तर बिहार, भारत व तराई क्षेत्र, नेपाल

2- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में) -

हिंदी	-	रसनचौकी
अंग्रेज़ी	-	RASANCHOKI
मिथिलाक्षर या तिरहुता	-	

3- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण

भाषिक क्षेत्र	-	मिथिला (MITHILA)
भाषा	-	मैथिली (MAITHILI) अंगिका (ANGIKA) व बज्जिका (BAJJIKA)
बोली	-	पांच प्रकार – श्रोतीय मैथिली, मानक मैथिली, निम्नवर्गीय, मुसलमानी व साधुकरी मैथिली

4- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें)

रसनचौकी वादक मुख्य रूप से मिथिला क्षेत्र के चमार जाति के लोग होते हैं। इसी जाति के सदस्यों का पारम्परिक जातिगत व्यवसाय है। प्राचीन समाज में कर्म के आधार पर वर्गीकृत जाति व्यवस्था में चमार जाति (एक दलित जाति) के लोगों के जीवन-यापन का प्रमुख साधन रसनचौकी वादन रहा है। कालांतर में विभिन्न कारणों से इस जाति के लोग क्रमश: अपने पारम्परिक व्यवसाय से विलग होते गए और वर्तमान में यह अमूर्त परंपरा जीर्ण-शीर्ण हालत में पहुँच गया है। परंतु पोषक मिथिला का समस्त समाज रहा है। अत: मिथिला के अमूर्त संस्कृति लोक वाद्य – रसनचौकी का रक्षक उत्तर बिहार के लगभग 17 जिलों के मैथिल समाज है। इस परम्परा के सीधी दायित्व इसके वादक और गुरु, जो चमार जाति के हैं उनकी सूची अलग से तैयार की जा रही है।

5- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों की जीवंतता का विस्तारित भोगोलिक क्षेत्र (ग्राम, प्रदेश, राज्य, देश, महादेश आदि) जिनमें उनका अस्तित्व है / पहचान है |

रसनचौकी वादन परम्परा प्राचीन मिथिला में मुल रुप से कायम रहा है। कालांतर में लोक परम्पराओं से लुप्त होते-होते वर्तमान में यह उत्तरी बिहार के मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगुसराय, आदि में आज भी कायम है। जिसे क्षेत्र के राजनीतिक नक्शे पर इस इस प्रकार समझा जा सकता है, जो नीचे दिया जा रहा है:

6- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा / उसका विवरण

1. ~~मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)~~
2. प्रदर्शनकारी कलाएं –

मिथिला का लोकवाद्य रसनचौकी वादन एक पारंपरिक प्रदर्शनकारी कला है। संभवत: यह कला देश के प्राचीनतम लोक कालाओं में से एक है। इसके वादक मिथिला के क्षेत्र चमार जाति के लोग होते हैं। यह इस जाति का पारम्परिक जातिगत व्यवसाय है। प्राचीन समाज में कर्म के आधार पर वर्गीकृत जाति व्यवस्था में चमार जाति के लोगों के जीवन-यापन का प्रमुख साधन रसनचौकी वादन ही रहा है। इसमें फूँक कर बजाने वाला कारा, पीपही,

संभवत: जो वर्तमान काल का शहनाई जैसा होता है, और पीटकर बजाने वाले वाद्य में से तबली, डिग्गी, खुरदक आदि है।

3. सामाजिक रीति-रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि –

रसनचौकी वादन का मिथिला के समाज में धार्मिक मान्यता के साथ शुरू हुआ। मिथिला सीता की जन्मभूमी है और यहाँ के लोक जीवन और लोकाचार में प्रत्येक स्तर पर आज भी सीता विद्यमान है। जो मिथिला के लोकाचार में जाति, धर्म, संप्रदाय आदि की सीमा से परे है। चूंकी इस वाद्य परंपरा की उत्पति सीता के जन्म से है और इसे आवाहन संगीत के रूप में समाज में मान्यता प्राप्त है इसलिए इसे मांगलिक कार्य, खासकर भगवती के आवाहन के लिए आवश्यक रूप से बजाया जाता है। यह रपरंपरा आदि काल से चली आ रही है। संस्कार से संबन्धित किसी प्रकार का आयोजन इसके वादन के बिना सम्पूर्ण नहीं माना जाता है।

4. प्रकृति एवं जीव-जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं-

प्राचीन काल में जम्बूद्वीप के नाम से प्रसिद्ध भू-भाग में मिथिला को बौद्धिक रूप अग्रणी माना जाता रहा है। इस क्षेत्र की बौद्धिकता इसके लोक तत्वों में देखने को मिलता है। इसी लोकाचारों में से एक लोक अतटवा है रसनचौकी वादन। इसका अपना अलग सामाजिक-वैज्ञानिक प्रभाव है। मिथिला के सामाजिक जीवन में हर क्षण व हर भावना के लिए अलग से गीत संगीत का प्रावधान है। इन प्रावधानों के पीछे भौगोलिक वातावरण, दैनिक चर्या आदि है। इस सामाजिक-वैज्ञानिक ज्ञान का अनुशीलन करने में रसनचौकी एक माध्यम का काम भी करता है। रसनचौकी वादन के अदृश्य और अमूर्त ज्ञान

परंपरा से स्थापित सामाजिक प्रथा की गूढ़ता इसमें समाहित है। इसके विभिन्न धुनों में समाहित लोक तत्वों के सार में मिथिला के

5. पारंपरिक शिल्पकारिता –

रसनचौकी वादन परम्परा लोक व पारम्परिक कला है। इसमें दो तरह के वाद्य यंत्रों-मूंह से फूंककर व पीटकर, का प्रयोग किया जाता है। मूंह से फूंककर बजाए जाने वाले वाद्य कारा व पीपही है तथा हाथ से पीटकर बजाया जाने वाला वाद्य डिग्गी, तबली, खुरदक, टीमकी आदि हैं। ये सभी पारम्परिक वाद्यों का निर्माण मिथिला के जाति विशेष ही कराते हैं। यह वाद्य निर्माण इन विशेष जातियों का अपना जातिगत पारम्परिक शिल्प कौशल है। डिग्गी, तबली, खुरदक, टीमकी आदि मिट्टी के कटोरानुमा वाद्य है जिसे कुम्हार जाति के लोग कच्चे चिकनी मिट्टी से बनाकर आबा (भट्ठी) में पकाकर बनाते है। इसे आम कुम्हार नहीं बना सकता है। इसे बनाने के लिए विशेष अनुभव की आवश्यकता होती है। फिर इसे छबाते हैं। इसी प्रकार कारा व पीपही लकड़ी का बना होता है। इसे बनाने के लिए मिथिला के ही बढ़ई जाति के लोग गमहारी आदि की लकड़ी का इस्तेमाल कराते हैं। इसे बनाने में कौन और किस प्रजाति के लकड़ी का इस्तेमाल होगा और उस पेड़ की उम्र क्या होगी यह भी भी बढ़ई अपने अनुभव के आधार ही ढूँढता है। यह इसके गुणवत्ता को तय करता है। रसनचौकी वाद्य समूह के वाद्यों का निर्माण मिथिला के पारम्परिक शिल्प कौशल के बिना संभव नहीं है।

7- कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें

रसनचौकी का आंरभ रामायणकाल से माना जाता है। सीता के जन्म से शुरु हुई परंपरा आज भी लोक परम्परा में पाया जाता है। इससे समाज में

आर्थिक, धार्मिक तथा सार्वभौमिक लाभ होता आ रहा है। प्राचीन वादय यंत्र रसनचौकी, की सामाजिक मान्यता इतना आस्था पूर्ण है, कि किसी भी मांगलिक कार्यो में इसका वादन अतिआवश्यक माना जाता है। समाज मे मान्यता है कि इस वादय के बिना सामाजिक कोई भी मांगलिक कार्य सम्पुर्ण सम्पादित नही होता है। बाल्मीकी रामायण में भी यह चर्चा कि सीता जी के विवाह के समय रसनचौकी का कालान्तर नाम शहनाई आदि बाजों का मधुर वादन से गुंजायमान हुआ है। जिससे यह साबित किया जा सकता है, कि रसनचौकी का वादन सीता जी के विवाह के समय जनकपुर में हुआ था। रामचरित मानस में जिसे शहनाई कहा गया है।

इस काल के बाद से ही मिथिला का लोक परम्परा में, आपदा के समय कष्ट निवारण हेतु- या किसी भी शुभ कार्यो में देवताओं को प्रसन्न करने हेतु रसनचौकी को आवाहन संगीत के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। यह तो सर्वमान्य है कि कला का सबसे बड़ा संरक्षक स्थानीय शासन रहा है और उसके बाद समाज। कालांतर में क्रमश: इसका दोनों ही स्तरों पर क्षय हुआ और आज चिंताजनक हालत में है।

रसनचौकी को मिथिला क्षेत्र का "फोक आर्केस्टा" भी कहा जाता है। इसे बजाने के लिए कम से कम चार तथा अधिक से अधिक 7 से 10 कलाकारों की जरुरत होती और है। जिसमें तीन कलाकार मुंह से फूंककर कारा और सुर बजाते है जिसमें दो कलाकार कारा बजाते है। जिसमें (7) छिद्र होते हैं। उन छिद्रों पर अंगुली के अन्तराल से दबाते हुए संगीत एवं गीतों की रचना करते है। इस यंत्र की लम्बाई लगभग डेढ़ फीट से दो फुट के अन्दर होता है। उस तीन बाजा में एक सुर बाजा होता हैं। जिसका काम सिर्फ सुर साधने के लिए होता है। उसमें अधिक से अधिक तीन छिद्र किसी किसी वादय यंत्र में होते है वैसे अधिकतर यंत्रों में एक ही छिद्र होते हैं। एक व्यक्ति केवल मिट्टी से बना कटोरानुमा तबली डिग्गी पर रिधम बजाते है।

जिसका बायां (सम) 12 ईंच का होता है। उस पर बकरी के खाल से छबाये जाते हैं। और तबला की तरह उसके उपर बीच में काली स्याही मसाला भी लगाया जाता हैं उसकी डोरी भी बकरी के खाल का ही होता है। दायां वादय(डग्गी) टिमकी का साईज लगभग 6 ईचं के मुंह वाला होता है। उसे भी बकरी के खाल से छबाते हैं। परन्तु इसके ऊपर काली स्याही मसाला नहीं दिया जाता हैं। क्योंकि पहली कला तथा दुसरी कला में बजाने हेतु इसे बार बार आग से सेकने की जरुरत पडती है। इसमें भी बकरी के खाल का रस्सी (डोरी) होता है। इस रिधम वादय यंत्रों को अधिकतम कलाकार लोग गोद में लेकर बजाते हैं। कुछ कलाकार लोग उसके नीचे कपड़े का या सुखे घास (धान के नार) का गददा बनाकर रखते हैं। कमोवेश यह तबले के आकार का होता है। तबला जो आजकल सरेआम बजाया जाता है, वह ताम्बा स्टील या लोहे का बना होता है, और डुग्गी लकड़ी का बना होता है। परन्तु रसनचौकी के साथ बजने वाले तबली डग्गी (टिमकी) ये दोनो मिटटी के बने होते हैं। जिसे कुम्हार लोग घडें की तरह आग में पकाते हैं।

रसनचौकी के कई रूप आज पाए जाते हैं। ढोल-पीपही भी इसी का एक रूप है। इसके वाद्य यंत्रों पर भी कालांतर में प्रयोग हुए है। खुरदक, पीपही आदि इसी के रूप हैं। खुदरक तथा रसनचौकी वादन में कोई खास अन्तर नहीं होता है। बस वादय यंत्रों की बनावट में थोड़ी ही अन्तर है। ढोल-पिपही बजाने में चार कलाकारों की आवश्यकता होती है। जिसमें दो कलाकार पीपही और दो कलाकार अलग अलग रिधम बजाते हैं। इस वादय यंत्रों को बच्चे प्रारंभिक अवस्था में आसानी से सिखकर फिर परिपक्वता प्राप्त करने के बाद रसनचौकी बजाते हैं।

8- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका

है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त? अगर है तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है?

मिथिला का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत लोकवाद्य रसनचौकी वादन प्राचीन समाज में दलित जाती चमार (चर्मकार) का जातिगतव पेशा था परंतु बदलते समाज में अन्य जाति के सदस्य भी अपनाने के तरफ अग्रसर हो रहे हैं। अभी तक इस वादन परंपरा का कोई औपचारिक प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है। अगली पीढ़ी तक यह परम्परा वंशानुगत रूप से ही अपनी यात्रा तय करती है।

मिथिला के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रसनचौकी वादक कलाकारों के नाम आगे दिया जा रहा है जो वर्तमान में इस परम्परा के संवाहक हैं और मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है इसे आगली पीढ़ी तक ले जाने के लिए, परंतु इस परमपरा को जब तक समाज इस के संरक्षण के लिए आगे नहीं आएगा तब तक इसका संरक्षण संभव नहीं

9- ज्ञान और हुनर/कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्त्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है ?

मिथिला की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत रसनचौकी वाद्य आदि काल से यहाँ की समाज के प्रचलन में है। इसकी सुंदरता इसके मौलिक स्वरूप में ही है। विभिन्न कालखण्डों में उत्तर भारत के अन्य भागों के तरह मिथिला भी अनेकों कई सामाजिक-राजनीतिक उथल-पुथल से गुजरा है परिणाम स्वरूप यह क्षेत्र सांस्कृतिक रूप से प्रदूषित और राजनीतिक रूप से खंडित भी हुआ है। प्राचीन मिथिला क्षेत्र वर्तमान में दो भागों में बटकर एक भाग दक्षिण नेपाल और दूसरा भाग उत्तर बिहार, भारत में राजनीतिक रूप से है। अनेक दौर में हुए सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव रसनचौकी लोक वाद्य पर भी पड़ा है। हाँ इतना अवश्य हुआ है कि आज मिथिला के समाज में

रसनचौकी के स्थान पर अन्य वाद्य जैसे – ब्रास बैंड, डी जे आदि को प्रयोग में लाया जा रहा है।

वर्तमान युग के संचार माध्यमों का रसनचौकी का प्रभाव बहुत ही कम पड़ा है। जिसका सबसे बड़ा कारण इस विधा की समाज में न्यून उपलब्धता ही है। क्योंकी समाज की उदासीनता के कारण यह विधा वर्तमान युग के संचार माध्यमों के प्रसार से पहले ही जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुँच चुका था और अपनी उपस्थिती नगण्य कर चुका था। परंतु वर्तमान संचार के प्रयोग से इस विधा को संरक्षित और समाज में पुनर्प्रयोग में लाया जा सकता है।

10- आज वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्त्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता हैं?

लोकवाद्य रसनचौकी वादन मिथिला के दलित जाति-चमार (चर्मकार) का जातिगत पेशा है। इस जाति के लोग मुख्यत: दैनिक मजदूर होते हैं। नित्य कमा कर अपने व अपने परिवार का भरण-पोषण करने वाले लोग अपने पारम्परिक कला को समाज द्वारा प्रश्रय नहीं मिलने के कारण क्रमश: इससे विमुख होते गए और यह पारम्परिक कला का ज्ञान अगली पीढ़ी को उस ईमानदारी से नहीं कर पाए नतीजा यह हुआ की आज रसनचौकी का मूल स्वर कहीं खो सा गया है। समाज के इस जाति विशेष के वरिष्ठ पीढ़ी में तो इस परंपरा के प्रति आग्रह तो है परंतु डर भी है। फलस्वरूप युवा पीढ़ी इससे विमुख होती गई। इसका मतलब यह नहीं है की उन्हें अपनी इस पारम्परिक जातिगत विरासत पर गर्व नहीं है। यदि अनुकूल परिस्थिति का निर्माण हो तो यह संभव है की इस जाति ही नहीं अन्य जाति के युवा भी इसे एक कला के रूप में अपनाने को तैयार हैं। आज भी परिस्थिति कितना भी विपरीत हो परंतु समाज में इसके आयोजन के प्रति उत्साह भी है और आग्रह भी।

11- क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के

प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों. क्या प्रस्तावित योजना के तावत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

मिथिला के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत लोक वाद्य रसनचौकी वादन व वाद्य संघटन की समूची प्रक्रिया में किसी प्रकार के कोई अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों का उलंघन नहीं होता है। और ना ही किसी व्यक्ति, समुदाय आदि के सम्मान को ठेस पहुंचता है। यह वाद्य परंपरा समाज के विकास में योगदान सुनिश्चित करता आ रहा है और आगे भी कर सकता है। रसनचौकी परंपरा देश के कानून का उलंघन नहीं करता है और न ही समाज के सौहार्द को क्षति पहुंचाता है।

12- प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को निश्चित करती है?

लोक वाद्य रसनचौकी वादन परंपरा समाज में पारदर्शिता लाने के लिए एक दूसरे से के प्रति समान के आग्रह को प्रस्तावित करता है। अपने पारम्परिक धरोहर को सहेजने की सजगता बढ़ाता है और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करता है। साथ ही नई पीढ़ी को अपने मौलिक अस्मिता के प्रति आकर्षित भी करती है।

13- योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/क़दमों/प्रयासों के बारे जानकारी में जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं। उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है |

1- औपचारिक एवं अनौपचारिक तरीक़े से प्रशिक्षण (संचरण)
2- पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध
3- रक्षण एवं संरक्षण
4- संवर्धन एवं बढ़ावा
5- पुनरुद्धार / पुनर्जीवन

वर्तमान में रसनचौकी वाद्य परंपरा का प्रशिक्षण परंपरागत रूप से परिवार के वृद्ध वादक कलाकार द्वारा नई पीढ़ी को अनौपचारिक व पारम्परिक रूप से ही प्रशिक्षित कराते हैं। बच्चे अपने घर के वरिष्ठों के साथ देखते-देखते ही सीखते हैं। सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर वर्तमान में समाज में कोई ऐसा तंत्र नहीं है जिसके माध्यम से इसके संवर्द्धन, संरक्षण और पुनरुद्धार को बढ़ावा मिले। हमें आज इस विषय पर सर्वे, दस्तावेजीकरण, शोध व प्रशिक्षण आवश्यक है।

आदि काल से पीढ़ी-दर-पीढ़ी की यात्रा पारम्परिक रूप से तय करती हुई रसनचौकी को आगे बढ़ाने के लिए इसके प्रशिक्षण प्रक्रिया का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। इसे पारम्परिक कला समझकर इसका दायित्व केवल समाज के जाति विशेष या समाज पर नहीं छोड़ा जा सकता है। चूंकी रसनचौकी वाद्य कला है अत: इसका औपचारिक प्रशिक्षण आवश्यक है। पारम्परिक रूप से इसका प्रशिक्षण अनौपचारिक ही होता आया है जिसमें सबसे बड़ी बाधा समय का है। अनौपचारिक या पारम्परिक रूप से प्रशिक्षण के माध्यम से एक रसनचौकी वादक तैयार करने में वर्षों लग जाते हैं। वहीं यदि इसकी औपचारिक प्रशिक्षण शुरू हो और सामाजिक रूप से जाति विशेष का बंधन खत्म हो तो इसे पुन: इसे पुनर्जीवित किया जा सकता है। क्योंकी समाज के लगभग सभी वर्गों के लोगों में इस अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के प्रति आग्रह है।

रसनचौकी वाद्य परंपरा आज जिस स्थिति में है उस स्थिति में सर्वप्रथम इसके वादक कलाकारों की पहचान के लिए सर्वे करना आवश्यक है। कुछ वृद्ध कलाकार जो इसे मूल स्वरूप में बजाते हैं उनका

दस्तावेजीकरण करना आवश्यक है। दस्तावेजीकरण के बाद विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी के कलाकारों को तैयार किया जा सकता है। कम से कम दो-तीन स्थानों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जाए। इतना सब करने के साथ-साथ विभिन्न राष्ट्रीय/क्षेत्रीय उत्सवों/महोत्सवों में इसकी प्रस्तुति करवाया जाए।

14. स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये ? उनका विवरण दें |

स्थानीय स्तर पर समाज के कुछ लोगों द्वारा कभी-कभी इसके संरक्षण के लिए कुछ उपाय किए जाते रहे हैं। परंतु राष्ट्रीय स्तर पर सर्वप्रथम संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली ने इसे अपने राष्ट्रीय लोक उत्सवों में प्रस्तुत किया है। अही पिछले वर्ष अकादेमी के लोक व पारंपरिक कला के उत्सव "देशज', पटना 2014 में इस वाद्य परंपरा की प्रस्तुति दसो दिन करवा कर इसे राष्ट्रीय स्तर पर लाने का काम किया है। दस दिन के पटना देशज उत्सव में दसो दिन तक अलग-अलग रसनचौकी दलों कि प्रस्तुति कारवाई गई। इस हेतु मिथिला में लोककला के लिए कार्य कर रहे चार-पाँच संस्थाओं द्वारा मिथिला के विभिन्न क्षेत्रों के कलाकारों को संग्रह कर प्रस्तुति तैयार किया गया था।

15. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बंधित कारणों का व्योरा दें |

मिथिला के अमूर्त सांस्कृति परंपरा रसनचौकी वर्तमान में अत्यंत चिंताजनक स्थिति में है। जातिगत विरासत की यह परंपरा आज औसतन 10 गांवों में तलाशने के बाद चार-पाँच लोगों के वादकों का एक समूह तैयार किया जा सकता है। जबकि पूर्व में मिथिला के चमार जाति के प्रत्येक व्यक्ति इसे बजाना जानता था। इसलिए यदि आज भी

यदि इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए उचित कदम नहीं उठाया गया तो मिथिला का अमूर्त वाद्य परम्परा रसनचौकी का अस्तित्व आने वाले 10 या बीस वर्षों में हमें नज़र ही ना आए। इसका सबसे बड़ा कारण सामाजिक उपेक्षा, इसके वादक कलाकारों का जीवन-यापन, तथा स्थानीय व राष्ट्रीय स्तर पर शासन के संबन्धित अंगों की उदासीनता के साथ-साथ वर्तमान संचार तंत्र और उससे उपजी मानसिकता है।

16. संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं ? (इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके | ये उपाय ठोस हों जिसे भविष्य की सांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके |)

देश के सबसे प्राचीन लोकपरमपराओं में से एक मिथिला के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व रसनचौकी एक पीढ़ी से दूसरी पढ़ी तक तक हजारों वर्षों की यात्रा पारम्परिक रूप से ही आज तक तय करती रही है। परंतु आज यह प्रमुख लोक परम्परा खतरे में है। पहले जहां मिथिला के जाति विशेष-चमार जाति का लगभग हर सदस्य इसका वादन करता था वहीं आज दस-बीस गांवों में ढूँढने के बाद भी एक रसनचौकी दल तैयार नहीं हो पाता है। इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित, संवर्द्धित कर समाज में पुनर्प्रयोग में लाने हेतु संबन्धित सभी व्यक्तियों, समूहों, संगठनों आदि को अलग-अलग या समग्र रूप से अपने-अपने स्तर पर कार्य करने होने। इस विषय पर अभी तक किए गए अध्ययन व विभिन्न पनधारियों (stakeholders) से बातचीत के आधार पर हमें निम्नलिखित उपाय करने होंगे:

अ. रसनचौकी वाद्य परंपरा वर्तमान स्थिति, वादक कलाकारों आदि कि स्थिति जानने हेतु सर्वप्रथम सर्वे करना आवश्यक है। प्रस्तुत परियोजना - रसनचौकी वाद्य परंपरा की संदर्भ सूची के निर्माण प्रक्रिया में प्रारम्भिक सूची बन जाएगी।

आ. कुछ अतिवृद्ध रसनचौकी वादक कलाकार हैं, जिनकी उम्र 75 वर्ष या उससे ऊपर है जो इसके यथासंभव मूल स्वरूप में बजाते हैं उन गुरुओं का दस्तावेजीकरण करना आवश्यक है। ताकि इसे संरक्षित किया जा सके।

इ. प्रस्तुतिपरक कला के विभिन्न राष्ट्रीय/क्षेत्रीय उत्सवों/महोत्सवों में रसनचौकी की प्रस्तुति करवाया जाए जिससे इसके प्रसार क्षेत्र में वृदधी होगा और प्रस्तुत करने वाले कलाकारों को आर्थिक सहायता के साथ आत्मसम्मान मिलेगा। रसनचौकी के प्रति युवा वर्ग के विलग होने के बड़े कारणों में से एक सामाजिक मान्यता भी है। यदि रसनचौकी कलाकारों को राष्ट्रीय/क्षेत्रीय मंचों पर मिले सम्मान इस कला के लिए संजीवनी का कार्य करेगा।

ई. प्रशिक्षण कार्यक्रम :

कार्यशाला – रसनचौकी के प्रभाव क्षेत्र – बिहार के सभी जिलों में प्रखण्ड स्तर पर अल्पकालीन कार्यशाला का आयोजन कर युवावर्ग को आकर्षित व गहन प्रशिक्षण हेतु तैयार किया जा सकता है।

औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रम – वर्तमान में रसनचौकी प्रशिक्षण प्रक्रिया का पुनर्मूल्यांकन होना आवश्यक है। इसे पारम्परिक कला समझकर इसका दायित्व केवल समाज पर नहीं छोड़ा जा सकता है। चूंकी रसनचौकी वाद्य कला है अत: इसका औपचारिक प्रशिक्षण आवश्यक है। कार्यशाला के माध्यम से चुन कर कुछ कलाकारों के लिए प्रशिक्षण कि व्यवस्था ज़िला स्तर पर किया जाए।

उ. जाति विशेष के बंधन से इस कला को मुक्त करना आवश्यक है। नि:संदेह यह लोककला एक जाति विशेष कि धरोहर है और समाज के अन्य जाति इसे पूर्णत: अपनाने से कतराते हैं। परंतु मैथिल समाज को आगे बढ़कर इसे अपनाना चाहिए। समाज के अन्य जाति में रसनचौकी की स्वीकार्यता जितनी बढ़ेगी उसी समाज में इस लोककला का प्रयोग भी उतनी ही अधिक होगा।

ऊ. रसनचौकी वादन को वर्तमान संचार माध्यमों में अवसर प्रदान कर इसे रोज़गार से जोड़ा जा सकता है। रसनचौकी के गुरुओं (परास्नातक) के लिए पेंशन।

ऋ. परियोजना पारंपरिक ज्ञान, कला, शिल्प के बारे में जागरूकता पैदा करने और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन।

ऌ. कुम्हार जाती के नई पीढ़ी के सदस्यों/कलाकारों के लिए प्रशिक्षण

ऍ. शोधकर्ता, विद्वानों द्वारा समूह चर्चा, प्रदर्शनियों और संगोष्ठी का आयोजन। लोककलाविदों को अपने लेखनी में रसनचौकी को स्थान देकर इसके सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आर्थिक संदर्भ लेकर ज्यादा से ज्यादा प्रकाशन करें।

ऎ. इसे भारत का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व घोषित कर, इसे बच्चों के शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।

17. सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

देश के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत मिथिला का लोकवाद्य रसनचौकी वादन सामाजिक सहभागिता से ही प्रस्तुत होता है। इसकी उत्पति ही सामाजिक मंगलकामना के लिए हुई है। मिथिला भगवती सीता की भूमि है और इसे शक्तिपीठ कहा गया है। सामाजिक लोक मान्यता अनुसार सनचौकी आवाहन संगीत संगीत है जो भगवती को मिथिला में आमंत्रित करता है। मिथिला में कोई भी अनुष्ठाणिक कार्य बिना रसनचौकी वादन के पूर्ण नहीं माना जाता है। विडम्बना यह है कि इसे बजाने वाले केवल निम्न जाति के कारण आज भी समाज में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित नहीं है। दूसरे तरफ इनके कला के बिना किसी भी जाति का निर्वाह नहीं है फिर ये बहिष्कृत हैं यह एक विडम्बना ही है। इसके आयोजन में समाज समग्र रूप से एकमत तो है परंतु वर्ण व्यवस्था इसका सबसे बड़ी बाधा है।

दूसरे तरफ भले ही समाज को इसके वादक प्रतिष्ठित भले ही न लगे परंतु रसानचौकी एक कला के रूप में सर्वमान्य है। सभी मिथिलावासी इस लोककला के प्रति मृदुभाव रखते है साथ ही इसके संरक्षण के लिए सदा तैयार रहते हैं।

18. सम्बंधित समुदाय के संघठन(नों) या प्रतिनिधि (यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत /परम्परा के तत्त्वों से जुड़ें हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य ग़ैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

1- संस्था /कम्पनी/ हस्ती का नाम –

2- सम्बंधित/ अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क -

3- पता

4- फोन नंबर : मोबाइल न. :

5- ईमेल :

6- अन्य सम्बंधित जानकारी

अ.	संस्था का नाम	–	अछिञ्जल
	सम्बंधित व्यक्ति का नाम	–	यदुवीर यादव
	पदनाम	–	सचिव
	पता	–	ग्राम + पोस्ट – भूपट्टी, वाया बाबूबरही ज़िला – मधुबनी, बिहार 847224
	मोबाइल न.	–	+91-9709925597
	ईमेल	–	achhinjal@gmail.com
आ.	संस्था का नाम	–	मैथिली फाउंडेशन
	सम्बंधित व्यक्ति का नाम	–	कौशल कुमार
	पदनाम	–	सचिव
	पता	–	ग्राम + पोस्ट – कमलपुर वाया पंडौल ज़िला – मधुबनी, बिहार
	मोबाइल न.	–	+91-9210369369
	ईमेल	–	kaushalkumar369@gmail.com
इ.	संस्था का नाम	–	मैथिल यूथ परिषद
	सम्बंधित व्यक्ति का नाम	–	श्री बसंत झा
	पदनाम	–	निदेशक
	पता	–	बालाजी कम्प्लेक्स पांडव नगर, दिल्ली 110092
	मोबाइल न.	–	+91-9310350503
	ईमेल	–	jha.basant @gmail.com

19. किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय/राज्यकीय/ राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें |

संस्था का नाम	–	अछिञ्जल
पता	–	ग्राम + पोस्ट – भूपट्टी, वाया बाबूबरही
		ज़िला – मधुबनी, बिहार 847224
मोबाइल न.	–	+91-9709925597
ईमेल	–	achhinjal@gmail.com

20. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब, लेख, ऑडियो-विसुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सहृदयों संग्राहकों, कलाकारों/व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाइट आदि जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के बारे में हों |

अभी तक प्राप्त नहीं।

(..............................)
अजित कुमार झा
ग्राम + पोस्ट – भटसिमर
ज़िला मधुबनी
बिहार 847235

परियोजना :

बिहार के लोकवाद्य-रसनचौकी का आंकड़ा सृजन व सूचिकरण

भाग दो :

अंतिम प्रगति प्रतिवेदन

(Final Report)

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत परियोजना

के अंतर्गत

संगीत नाटक अकादेमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा

वर्ष 2014-15 के लिए

स्वीकृत परियोजना :

मिथिला के लोकवाद्य-रसनचौकी का आंकड़ा सृजन व सूचिकरण

अंतिम प्रगति प्रतिवेदन

(Final Report)

आकडा संकलनकर्ता व शोधार्थी –

अजित कुमार झा

ग्राम+पोस्ट – भटसिमर

ज़िला – मधुबनी

बिहार 847235

परियोजना का नाम –

<u>मिथिला के लोकवाद्य रसनचौकी का आंकड़ा सृजन व सूचिकरण</u>

परियोजना का कार्यक्षेत्र राज्य –

बिहार (मिथिला क्षेत्र, उत्तर बिहार)

लोकवाद्य रसनचौकी का प्रभाव क्षेत्र –

लोकवाद्य रसनचौकी वादन, जिसे मिथिला का आवाहन संगीत के रूप में भी जाना जाता है, का प्रभाव क्षेत्र सम्पूर्ण मिथिला (भारत व नेपाल) रहा है। रसनचौकी के प्रभाव क्षेत्र को मध्य काल राजनैतिक नक्शे से समझा जा सकता है:

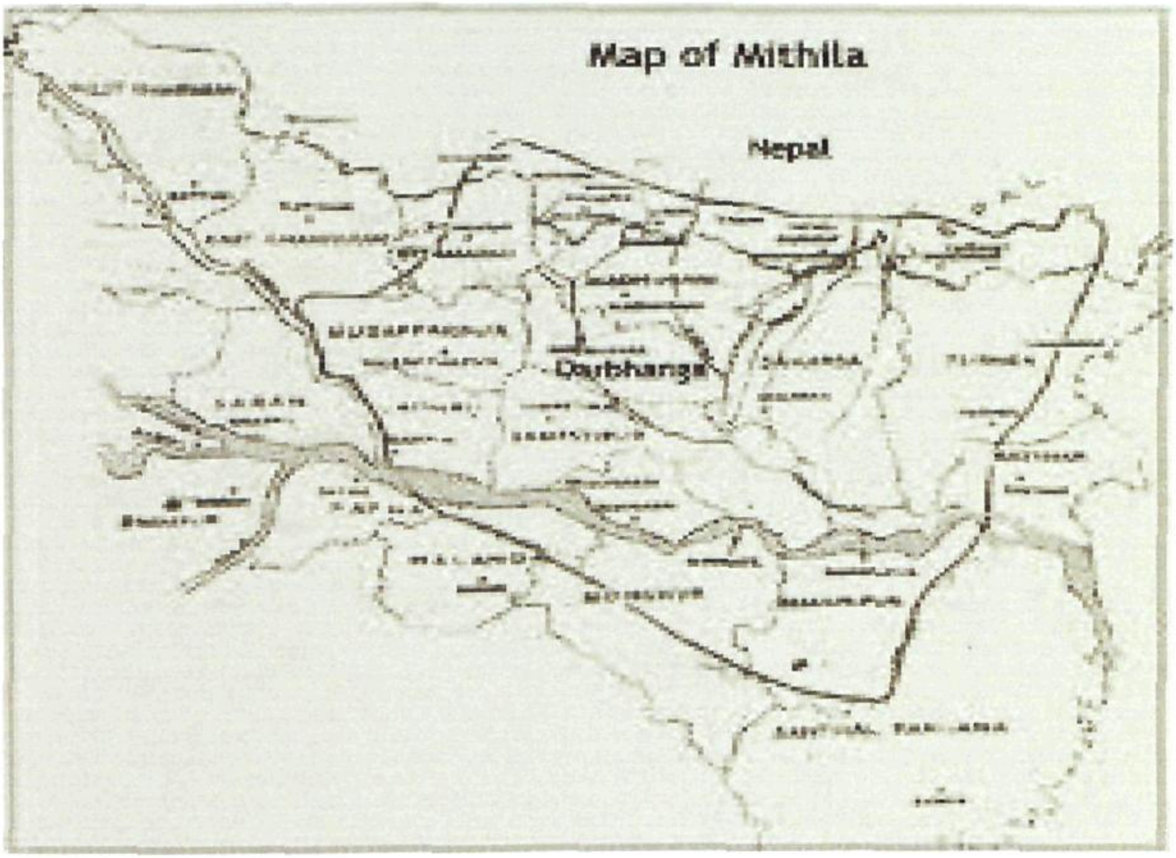

भारत रसनचौकी वादन परम्परा प्राचीन मिथिला (उत्तरी बिहार) के मधुबनी, दरभंगा, सीतामढ़ी, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, बेगुसराय, शिवहर, खगड़िया, भागलपुर आदि ज़िले तथा तराए क्षेत्र नेपाल के में आज भी कायम है। जिसे क्षेत्र के राजनीतिक नक्शे पर इस इस प्रकार समझा जा सकता है:

सांस्कृतिक विरासत तत्व का परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में) :

हिंदी	-	रसनचौकी
अंग्रेज़ी	-	RASANCHOKI
मिथिलाक्षर या तिरहुता	-	

योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण :

भाषिक क्षेत्र	-	मिथिला (MITHILA)
भाषा	-	मैथिली (MAITHILI) [अंगिका (ANGIKA) व बज्जिका (BAJJIKA) सहित]
बोली	-	पांच प्रकार – श्रोतीय मैथिली, मानक मैथिली, निम्नवर्गीय, मुसलमानी व साधुकरी मैथिली

भाषिक क्षेत्र – मिथिला क्षेत्र, बिहार, भारत व नेपाल। मिथिला का पौराणिक नाम "तिरहुत" भी है।

भाषा - मैथिली (अंगिका व बज्जिका सहित)

उपभाषा/बोली - मैथिली के प्रमुख पाँच उपभाषा या बोली हैं –

अ. केन्द्रीय बोली
आ. पूर्वी बोली
इ. दक्षिणी बोली
ई. पश्चमी बोली
उ. उत्तर-पूर्वी बोली

मिथिला एक परिचय –

वर्तमान उत्तर बिहार और तराई क्षेत्र नेपाल के भू-भाग का नाम "मिथिला" था। मिथिला प्राचीन भारत में एक राज्य था। मिथिला का इतिहास विदेह (अनुमानत: 3000 ई. पू.) से माना जाता है। विदेह के बाद मिथिला में नाग, नंद, मौर्य, शुन्ग, काण्व, आंध्र, कुशान, नाग, गुप्त, वर्धन, पाल गुर्जर, चंदेल, आदि के बाद कर्णाट वंश और फिर ओईनवार वंश का (अनु. 1353 स' 1526 ई.) शासन हुआ।

कई सदियों से चली आ रही लोकश्रुति परंपरा के कारण यह क्षेत्र बौद्धिकता के लिये भारत और भारत के बाहर विशेष रूप से जाना जाता रहा है। इस क्षेत्र कि प्रमुख भाषा मैथिली है। धार्मिक ग्रंथों में सबसे पहले इसका उल्लेख रामायण में मिलता है। मिथिला का उल्लेख महाभारत, रामायण, पुराण तथा जैन एवं बौद्ध ग्रन्थों में देखने को मिलता है।

पौराणिक प्रमाण :

जाता सा यत्र सीता सरिदमल जला वाग्वती यत्रपुण्या।
यत्रास्ते सन्निधाने सुर्नगर नदी भैरवो यत्र लिङ्गम् ॥
मीमांसा-न्याय वेदाध्ययन पटुतरैः पण्डितेमर्ण्डिता या।
भूदेवो यत्र भूपो यजन-वसुमती सास्ति मे तीरभुक्तिः ॥

रामायण में उल्लिखित है कि माता सीता की उत्पत्ति भूमि तिरहुत अर्थात् वैदिक मान्यता के अनुसार तीन वेद के (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद)

ज्ञाता अथवा त्रिवेद से आहुति देनेवाला जिस भू-भाग पर निवास करते हैं वो निर्मल जल से परिपूर्ण और मीमांसा-न्याय वेदादि अध्ययन में पटु से पटुतर -विद्वत मनीषि सुशोभित जिस भू-भाग के शासक यज्ञकर्त्ता पण्डित हैं वह तिरहुत धन्य है।

देशेषु मिथिला श्रेष्ठा गङ्गादि भूषिता भुविः।
द्विजेषु मैथिलः श्रेष्ठः मैथिलेषु च श्रोत्रियः ॥

गङ्गा-कोशी - गण्डकी-कमला-त्रियुगा-अमृता-वागमती-लक्ष्मणा आदि नदी से भूषित मिथिला के श्रेष्ठता वेद-पुराण-उपनिषद-दर्शन और ऋषि प्रमाण से सर्वथा प्रमाणित है। इस प्रान्त की सभ्यता-संस्कृतिक प्राचीनता स्वतः सिद्ध होती है। षड्दर्शन (न्याय-वैशेषिक-सांख्य-योग-मीमांसा-वेदान्त) मे से चार दर्शन के उद्भव स्थली मिथिला अनेक मैथिल महापुरुष के सुदीर्घ मणिरत्न की परम्परा से पूर्ण है। अपने मानसमंथन से मैथिल मनीषीगण जो कुछ भी प्राप्त किए हैं वह समग्र विश्व के लिए अनुकरणीय है। मिथिला के वैशिष्ट्य एवं प्रशस्ति मूलक श्लोक में तीरभुक्ति (तिरहुत) महात्म्य वर्णित है। देवी भागवत में मिथिला की प्रजा के सदाचार और समृद्धि का मनोरम वर्णन किया गया है।

मिथिला में कर्णाट वंशीय (क्षत्रिय वंश) के अन्तिम राजा पञ्जी प्रवर्तक महाराज हरिसिंह देव के अनुसार मिथिला के क्षेत्र में विराजमान 'सरिसब' में ग्यारहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध भाग में सामवेद कौथुम शाखा के शाण्डिल गोत्रीय महामहोपाध्याय रत्नापाणि के निवास का वर्णन मिलता है। वह हरिसिंह देव के समय तेरहवीं शताब्दी के माने जाते हैं। विष्णु पुराण और हरिवंश पुराण मे स्यमन्तक मणि उपाख्यान मे श्री बलभद्र के मिथिला प्रवास का वर्णन मिलता है।

श्लाघ्यास्पदं यद्यपि नेतरेषा मियंकृतिः स्वादुहायोऽया।
तथापि शिष्यै गुरुगौरवेन परः सहस्त्रैः समुपासनीया ॥

श्री शंकर मिश्रक विरचित श्लोक "रसार्णव" नाम से प्रसिद्ध है। पिता पुत्र सतत् "काव्य शास्त्र विनोदेन कालोगच्छति धीमताम्" को सार्थक करते हुए शास्त्र चर्चा में मग्न रहते थे। श्री शंकर द्वारा रचित "वैशेषिक सूत्रोपस्कार" में सूत्रकार कणाद आ अपने पिता भवनाथ (अयाची) मिश्र के स्मरण करते हुए लिखते हैं :

याभ्यां वैशेषिके तन्त्रे सम्यक् व्युत्पादितोऽस्यहम्।
कणाद भवनाथा भ्यां ताभ्यां मम नमः सदा ॥

श्री शंकर मिश्र के विद्वत्ता का प्रतीक उनके पाठशाला का नाम 'चौपाड़ि' था। इस चौपाड़ि पर उद्भट से उद्भट विद्वान आते थे और सतत् शास्त्रार्थ चलता रहता था। दूर-दूर से अध्ययनार्थी इस पाठशाला में अध्ययनार्थ आते रहते थे। अयाची शंकर की महिमा समग्र विश्व में प्रसरित है। अभी भी इस परिवार के वंशज केवल भारत वर्ष में ही नहीं अपितु समग्र विश्व में प्रसारित होकर अध्यवसायी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

प्राचीन में मिथिला का मानचित्र कुछ इस प्रकार का था -

वर्तमान मिथिला :

राजनीतिक रूप से वर्तमान में मिथिला दो भागों में बंट चुका है। एक भाग भारत के बिहार राज्य में और दूसरा भाग नेपाल में है। भारत के मिथिला क्षेत्र में उत्तरी बिहार के लगभग सत्रह जिले- मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सीतामढ़ी, पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सहरसा, पूर्णिया, सुपौल, मधेपुरा, खगड़िया, बेगूसराय, भागलपुर, मुंगेर, हैं।

नेपाल के मिथिला में नेपाल के ग्यारह ज़िले – सप्तरी, सुनसरी, मोरङ, परसा, बारा, रौतहट, सरलाही, महोत्तरी, धनुषा, सिरहा और झापा जिलों का क्षेत्र है।

नेपाल का मिथिला क्षेत्र

मैथिली भाषा : मैथिली भाषा का मूल लिपि मिथिलाक्षर है जिसे तिरहुता लिपि के नाम से भी जाना जाता है। मुख्य रूप से वर्तमान में मैथिली देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है। मिथिलाक्षर या तिरहुता लिपि में भी कालांतर में कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है।

प्राचीन मिथिलाक्षर या तिरहुता लिपि –

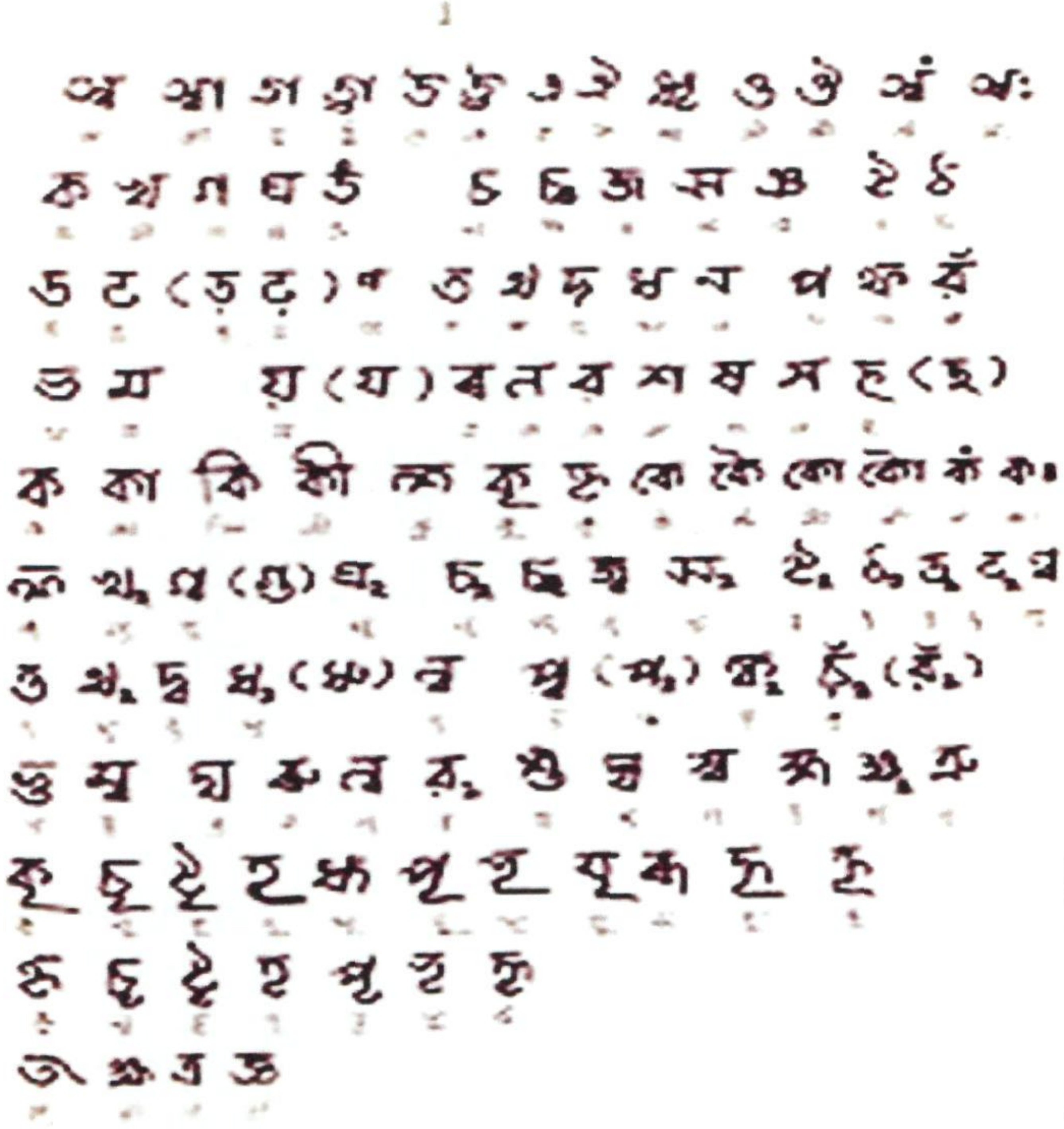

मिथिलाक्षर या तिरहुता लिपि के प्रचलित वर्तमान स्वरूपों में से एक –

वैसे तो मिथिलाक्षर लिपि अनेक स्थानों पर उपलब्ध है परंतु इसका प्राचीनतम नमूना दरभंगा जिले के कुशेश्वरस्थान के निकट तिलकेश्वरस्थान के शिवमन्दिर में है। इस मन्दिर में पूर्वी मागधी प्राकृत में लिखा है कि मन्दिर 'कात्तिका सुदी' (अर्थात कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा) शके 125 (अर्थात 203 ई.) में बना था। इस मन्दिर की लिपि और आधुनिक तिरहुता लिपि में बहुत कम अन्तर है। किन्तु 20वीं शताब्दी में क्रमश: अधिकांश मैथिल लोगों ने मैथिली लिखने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। किन्तु अब भी कुछ पारम्परिक ब्राह्मण (पण्डित) 'पता'

(विवाह आदि से सम्बन्धित पत्र) भेजने के लिये इसका प्रयोग करते हैं। सन् 2003 ईसवी में इस लिपि के लिये फॉण्ट का विकास किया गया था। अब तक कई नामों से मिथिलाक्षर का फॉन्ट बन चुका है। यह लिपि बंगला लिपि से मिलती-जुलती है किन्तु उससे थोड़ी-बहुत भिन्न है। यह पढ़ने में बंगला लिपि की अपेक्षा कठिन है।

उपभाषा व बोली : मैथिली भाषा के क्षेत्रगत, जातिगत, संबंधगत आदि प्रकार से अलग-अलग भिन्नता पायी जाती है। इन भिन्नताओं के मद्देनजर, डा0 ग्रीयर्सन, महेंद्र मलांगिया जैसे विभिन्न विद्वानों व भाषाविदों द्वारा किए गए अध्ययन के आधार पर हम मैथिली को निम्न पाँच वर्गो मे विभाजित कर सकते हैं:

क). भौगोलिक विविधताएं -

अ. केन्द्रीय बोली - भारत के मधुबनी, दरभंगा, सुपौल, सहरसा, आदि क्षेत्र् एवं नेपाल के जनकपुर, वैदेही आदि क्षेत्र

आ. पूर्वी बोली-मिथिला के कोसी नदी से पुरब के कुछ क्षेत्रें जैसे-सहरसा, पुर्णियाँ, कटिहार, अररिया, मधेपुरा आदि|

इ. दक्षिणी बोली (अंगिका)-मिथिला के अंग क्षेत्र् भागलपुर, मुंगेर आदि में बोले जाने वाली मैथिली|

ई. पश्चमी बोली (बज्जिका)-मिथिला के पश्चमी भागों के क्षेत्र् जैसे मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, चम्पारण एवं आस पास के नेपाल तराई के क्षेत्र।

उ. उत्तर-पूर्वी बोली (थरूहट) - दक्षिण-पूर्व नेपाल के तराई एवं उत्तर-पूर्व बिहार के मिथिला क्षेत्र् में बोली जाने वाली मैथिली|

ख). जाति एवं वर्णगत विविधताएं - मिथिला क्षेत्र् में भाशिक दृश्टिकोण से किये गये अध्ययन से पता चलता है कि यहाँ एक ही गाँव जिसका क्षेत्रफल 5-7 वर्ग किलोमीटर है, में यदि अलग-अलग जाति, वर्ण के लोग रहते हैं तो उनकी बोली अलग-अलग है| जैसे मानक मैथिली, श्रोतिय मैथिली, ठेंठ मैथिली, मुसलमानी मैथिली, निम्नवर्गीय मैथिली, और साधुकरी मैथिली।

ग). लिंगगत विविधताएं – मिथिला में पुरुष एवं स्त्री एक ही घर में रहते हुए भी बार्तालाप में एक-दूसरे को सम्बोधन अलग-अलग तरह से करते हैं। कुछ शब्दों का इस्तेमाल स्त्रीगण तकिया कलाम जैसे करती हैं| जैसे-म'र, धुर'जो! गे दैया! आदि|

घ). संबंधगत विविधताएं -

मिथिला के क्षेत्रें में कुछ संबंधों के बीच बातचीत की भाशा अलग होती है| जैसे ससुर-दामाद, सास-दामाद, ससुर-बहू (पुतोहु), सास- बहू (पुतोहु), जेठ (भैंसुर)-बहू (भाबहु) इत्यदि| इन संबंधगत विविधताओं को इस प्रकार समझा जा सकता है|

<u>ससुर-दामाद का संवाद</u> -

ससुर – हिनका गाम में सेहो रौदी छैन्ह ?

(मानक मैथिली – आहांक गाम में रौदी अछि ?)

(हिन्दी - आपके गाँव में अकाल है?)

दामाद - हँ, सौंसे रौदिये छै|

(मानक मैथिली - हँ, सबठाम रौदिये छै|)

(हिन्दी - हाँ, हर जगह तो अकाल ही है|)

<u>सास-बहू के बीच संवाद</u> -

सास - कनियाँ, खाउ ने|

(हिन्दी - बहू खा लो|)

बहू - हम खेलियैन्ह, इ सुइत रहथु|

(मानक मैथिली - हम खेलहु, आहाँ सुइत रहू|)

(हिन्दी - मैने खा लिया आप सो जाइए|)

ख). जाति एवं वर्णगत विविधताएं - मिथिला क्षेत्र में भी एक ही गाँव जिसका क्षेत्रफल 5-7 वर्ग किलोमीटर है, में यदि अलग-अलग जाति, वर्ण के लोग रहते हैं तो उनकी बोली अलग-अलग है| वैसे तो कहा गया है "पाँच कोस पर भाषा बदलै आ दस कोस पर पानि"| कहावत अक्षरश: सत्य है पाँच कोस की दुरी पर भाषा का टोन बदल जाता है कुछ शब्दों का उच्चारण बदल जाता है या फिर लिंग, प्रत्यय, उपसर्ग आदि बदल जाते हैं| जैसे मधुबनी जिला के भटसिमर गाँव में सर पर टोकड़ी में सब्जी बेचने वाली को 'कुँजरनी' कहा जाता है परन्तु उसी जिले के बरहा गाँव जो कि 10 कोस (30 किलोमीटर) पश्चिम में है, वहाँ 'कुँजरनी' को 'कबारनी' कहा जाता है| किसी चीज को नष्ट करने को "हेरा गेलै" को "जियान भ गेलै" कहा जाता है| इस तरह कई शब्द बदल जाते हैं|

सम्पूर्ण मिथिला (भारत एवं नेपाल) में भाषागत अध्ययन करने के बाद मैथिली भाषा को जातिगत तथा वर्णगत आधार पर वर्गों में विभेद कर सकते हैं -

1. मानक मैथिली :- वर्तमान में बोल-चाल एवं आधुनिक में मैथिली साहित्य में उपयुक्त होने वाली मैथिली| मुख्य रूप से जयबार ब्रह्मण, कायस्थ, राजपूत, यादव, आदि आर्थिक एवं शिक्षा सम्पन्न जातियों द्वारा बोल जानी वाली मैथिली|

2. श्रोतिय मैथिली :- उच्च ब्राह्मण वर्ग (सम्पूर्ण ब्रह्ममण नही) जिनका सम्बन्ध स्थानीय राजा, जमीनदार आदि के वंशज से हैं जिन्हें श्रोतिय मैथिली ब्राह्मण कहा जाता है, के द्वारा बोले जाने वाली मैथिली| मुगल काल के उत्तरार्द्ध में मैथिली साहित्य में लक्ष्मी नाथ गोसाई का अधिकतर रचना इसी श्रोतिय मैथिली के और भी कठिन शब्दों में है|

3. ठेंठ मैथिली : - मिथिला के सुदूर गाँव देहात में रहने वाले वर्गों के लोगों द्वारा बोले जाने वाली मैथिली|

4. मुसलमानी मैथिली :- मिथिला क्षेत्र के मुसलमानों द्वारा बोले जाने वाली मैथिली| यह बोली मिथिला के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के तराई क्षत्रों में रह रहे मुसलमानों द्वारा बोले जाने वाली बोली है|

5. निम्नवर्गीय मैथिली :- मिथिला में रह रहे निम्न जाति जैसे चमार, दुसाध, डोम, हलखोर, कियोट तुरहा, भेडिहर, अशिक्षित गुआर, मलाह, मुसहर, धोबी, ठठेरी, हलुवाई, हजाम आदि जातियों द्वारा बोले जाने वाली मैथिली है|

6. साधुकरी मैथिली :- मिथिला क्षेत्र् से बाहर के साधु/सन्यासी मिथिला आकर अपना मठ/मण्डली/गोल बना लेने के बाद स्थानीय लोगों को चेला बना लेते थे| उन्ही साधु सन्यासी द्वारा बोली जाने वाली मैथिली भाषा|

यदि एक ही गाँव में अलग-अलग वर्ग के लोग रहते हैं तो उनकी बोली अलग-अलग तरह कि होती है जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है :

हिन्दी :- मैं और राम दोनों आदमी कल कोलकाता गए थे।

मानक मैथिली :- हम और राम दुनू आदमी काइल्ह कोलकाता गेल छलियैक।

श्रोतिय मैथिली :- हम आ राम दुनू आदमी काईल्ह कोलकाता जाईत भेलियै।

ठेंठ मैथिली :- हम आ राम दुनू गोटे काईल्ह कोलकाता गेल छलियै|

मुसलमानी मैथिली: हम आ राम कल कोलकाता गया रहलियै|

निम्न वर्गीय मैथिली: हम आ राम दुनू गोरा काईल्ह कलकाता गाएल छलियै|

साधुकरी मैथिली : हम आ राम काईल्ह कोलकाता गया था है|

इस तरह मिथिला के विभिन्न क्षेत्रें में जैसे कोसी, मधुबनी, अंगिका, बज्जिका, एवं मधेस (नेपाल) आदि में शब्दों का उच्चारण, उपसर्ग, प्रत्यय आदि बदल तो जाता है परन्तु उन क्षेत्रों में भी जातिगत भाषाओं का प्रभाव इसी तरह का है|

योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा / उसका विवरण -

मिथिला का लोकवाद्य रसनचौकी वादन एक पारंपरिक प्रदर्शनकारी कला है। संभवत: यह कला देश के प्राचीनतम लोक कालाओं में से एक है। इसके वादक मिथिला के क्षेत्र चमार जाति के लोग होते हैं। यह इस जाति का पारम्परिक जातिगत व्यवसाय है। प्राचीन समाज में कर्म के आधार पर वर्गीकृत जाति व्यवस्था में चमार जाति के लोगों के जीवन-यापन का प्रमुख साधन रसनचौकी वादन ही रहा है। इसमें फूँक कर बजाने वाला कारा, पीपही, संभवत: जो वर्तमान काल का शहनाई जैसा होता है, और पीटकर बजाने वाले वाद्य में से तबली, डिग्गी, खुरदक आदि है।

<u>रसनचौकी एक परिचय : -</u>

मिथिला प्राचीन काल से ही कला, साहित्य संस्कृति के केंद्र तथा लोक परम्पराओं का एक मुख्य पोषक रहा है। रामायण में उल्लेखित है की सीता जब पृथ्वी से प्रगट हुई थी तो वातावरण में विशेष प्रकार का वाद्य गुंजायमान हुआ था यही लोकवाद्य आज "रसनचौकी" के नाम से जाना जाता है।

सीता के जन्म से शुरू हुई इस वाद्य परंपरा को समाज में आवाहन वाद्य के रूप में मान्यता मिला हुआ है। इसके बिना किसी प्रकार का अनुष्ठानिक कार्य सम्पूर्ण नहीं माना जाता है। सामाजिक-सांस्कृतिक परंपरावादी सामाजिक आस्था से जुड़े मिथिला का अमूर्त सांस्कृतिक विरासत रसनचौकी को मिथिला का फोक आर्केस्ट्रा भी कहा जाता है। कालान्तर में हुए कई मतान्तरों तथा लोक विवादो के वावजुद भी जनमानस में इस लोक कला के प्रति विशेष आग्रह विद्यमान है। इस लोक वाद्य का अपना अलग वैज्ञानिक प्रभाव है। आगे चलकर वैज्ञानिक शोध में भी यह साबित हुआ है। इसके वादन से उत्पन्न ध्वनी से वातावरण में उपस्थित अनेकों विषैले कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। प्राचीन समाज की संरचना जब जातिगत कर्म का बंटवारा हुआ तो रसनचौकी लोकवाद्य बजाने और इसके संरक्षण व समाज में उपेक्षित संवर्धन की जिम्मेवारी जिस जाति को दी गई वो आज-है।

सीता के जन्म से शुरु हुई परंपरा आज भी लोक परम्परा में पाया जाता है। इससे समाज में आर्थिक, धार्मिक तथा सार्वभौमिक लाभ होता आ रहा है।

प्राचीन वादय यंत्र रसनचौकी, की सामाजिक मान्यता इतना आस्था पूर्ण है, कि किसी भी मांगलिक कार्यो में इसका वादन अतिआवश्यक माना जाता है। समाज मे मान्यता है कि इस वादय के बिना सामाजिक कोई भी मांगलिक कार्य सम्पुर्ण सम्पादित नही होता है। बाल्मीकी रामायण में भी यह चर्चा कि सीता जी के विवाह के समय रसनचौकी का कालान्तर नाम शहनाई आदि बाजों का मधुर वादन से गुंजायमान हुआ है। जिससे यह साबित किया जा सकता है, कि रसनचौकी का वादन सीता जी के विवाह के समय जनकपुर में हुआ था। रामचरित मानस में जिसे शहनाई कहा गया है। इस काल के बाद से ही मिथिला का लोक परम्परा में, आपदा के समय कष्ट निवारण हेतु- या किसी भी शुभ कार्यो में देवताओं को प्रसन्न करने हेतु रसनचौकी को आवाहन संगीत के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। यह तो सर्वमान्य है कि कला का सबसे बड़ा संरक्षक स्थानीय शासन रहा है और उसके बाद समाज। कालांतर में क्रमश: इसका दोनों ही स्तरों पर क्षय हुआ और आज चिंताजनक हालत में है।

कारा (रसनचौकी)

कारा (रसनचौकी) – 2

सुर

तबली का दायाँ

रसनचौकी को मिथिला क्षेत्र का "फोक आर्केस्टा" भी कहा जाता है। इसे बजाने के लिए कम से कम चार तथा अधिक से अधिक 7 से 10 कलाकारों की जरुरत होती और है। जिसमें तीन कलाकार मुंह से फूंककर कारा और सुर बजाते है जिसमें दो कलाकार कारा बजाते है। जिसमें (7) छिद्र होते हैं। उन छिद्रों पर अंगुली के अन्तराल से दबाते हुए संगीत एवं गीतों की रचना करते है। इस यंत्र की लम्बाई लगभग डेढ़ फीट से दो फुट के अन्दर होता है। उस तीन बाजा में एक सुर बाजा होता हैं। जिसका काम सिर्फ सुर साधने के लिए होता है। उसमें अधिक से अधिक तीन छिद्र किसी किसी वादय यंत्र में होते है वैसे अधिकतर यंत्रों में एक ही छिद्र होते हैं।

एक व्यक्ति केवल मिट्टी से बना कटोरानुमा तबली डिग्गी पर रिधम बजाते है। जिसका बायां (सम) 12 ईंच का होता है। उस पर बकरी के खाल से छबाये जाते हैं। और तबला की तरह उसके उपर बीच में काली स्याही मसाला भी लगाया जाता हैं उसकी डोरी भी बकरी के खाल का ही होता है। दायां वादय(डग्गी) टिमकी का साईज लगभग 6 ईचं के मुंह वाला होता है। उसे भी बकरी के खाल से छबाते हैं। परन्तु इसके ऊपर काली स्याही

मसाला नहीं दिया जाता हैं। क्योंकि पहली कला त

मसाला नहीं दिया जाता हैं। क्योंकि पहली कला तथा दुसरी कला में बजाने हेतु इसे बार बार आग से सेकने की जरुरत पडती है। इसमें भी बकरी के खाल का रस्सी (डोरी) होता है।

इस रिधम वादय यंत्रों को अधिकतम कलाकार लोग गोद में लेकर बजाते हैं। कुछ कलाकार लोग उसके नीचे कपड़े का या सुखे घास (धान के नार) का गददा बनाकर रखते हैं। कमोवेश यह तबले के आकार का होता है। तबला जो आजकल सरेआम बजाया जाता है, वह ताम्बा स्टील या लोहे का बना होता है, और डुग्गी लकड़ी का बना होता है। परन्तु रसनचौकी के साथ बजने वाले तबली डग्गी (टिमकी) ये दोनो मिटटी के बने होते हैं। जिसे कुम्हार लोग घडें की तरह आग में पकाते हैं।

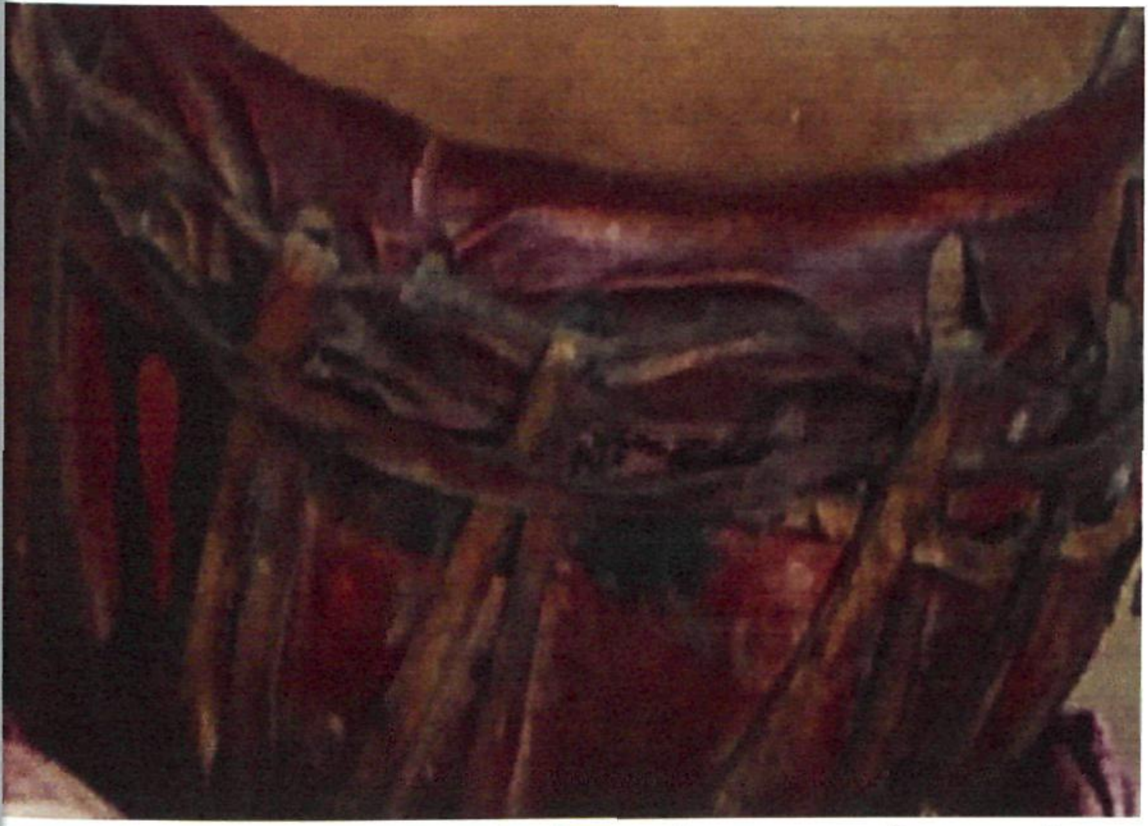

मिट्टी से बने तथा बकरे की खाल से छबाए तबली का बायाँ

मिट्टी से बने तथा बकरे की खाल से छबाए तबली का दायाँ

रसनचौकी के कई रूप आज पाए जाते हैं। ढोल-पीपही भी इसी का एक रूप है। इसके वाद्य यंत्रों पर भी कालांतर में प्रयोग हुए है। खुरदक, पीपही आदि इसी के रूप हैं। खुदरक तथा रसनचौकी वादन में कोई खास अन्तर नहीं होता है। बस वादय यंत्रों की बनावट में थोड़ी ही अन्तर है। ढोल-पिपही बजाने में चार कलाकारों की आवश्यकता होती है। जिसमें दो कलाकार पीपही और दो कलाकार अलग अलग रिधम बजाते हैं। इस वादय यंत्रों को बच्चे प्रारंभिक अवस्था में आसानी से सिखकर फिर परिपक्वता प्राप्त करने के बाद रसनचौकी बजाते हैं। इस वाद्य यंत्र को बजाने में चार पाँच कलाकार-होते हैं जिसमें तीन कलाकार मूंह से फूंककर बजाते है उसमें दो कलाकार मुख्य वाद्ययंत्र बजाते है जिससे संगीत की रचना करते है| तथा एक कलाकार एक वाद्रय को मूंह से फूँककर सिर्फ सुर-सा.प.साके अन्तर्गत बजाते है, जिस सुर के सहारे वे दोनो बजाने वाले कलाकर गीत संगीत की रचना करते समय सुर एवं स्वर स्थायी से अलग नही होते है तथा एक कलाकार दोनो हाथ से तबला के तरह तबली तथा डिगरी, टीमकी बजाते है जो तबली और डिगरी का पात्र मिटटी का बना हुआ आग पर पका हुआ तथा बकरी के चमड़े से छबाये होते है|

ढोल-पीपही – 1

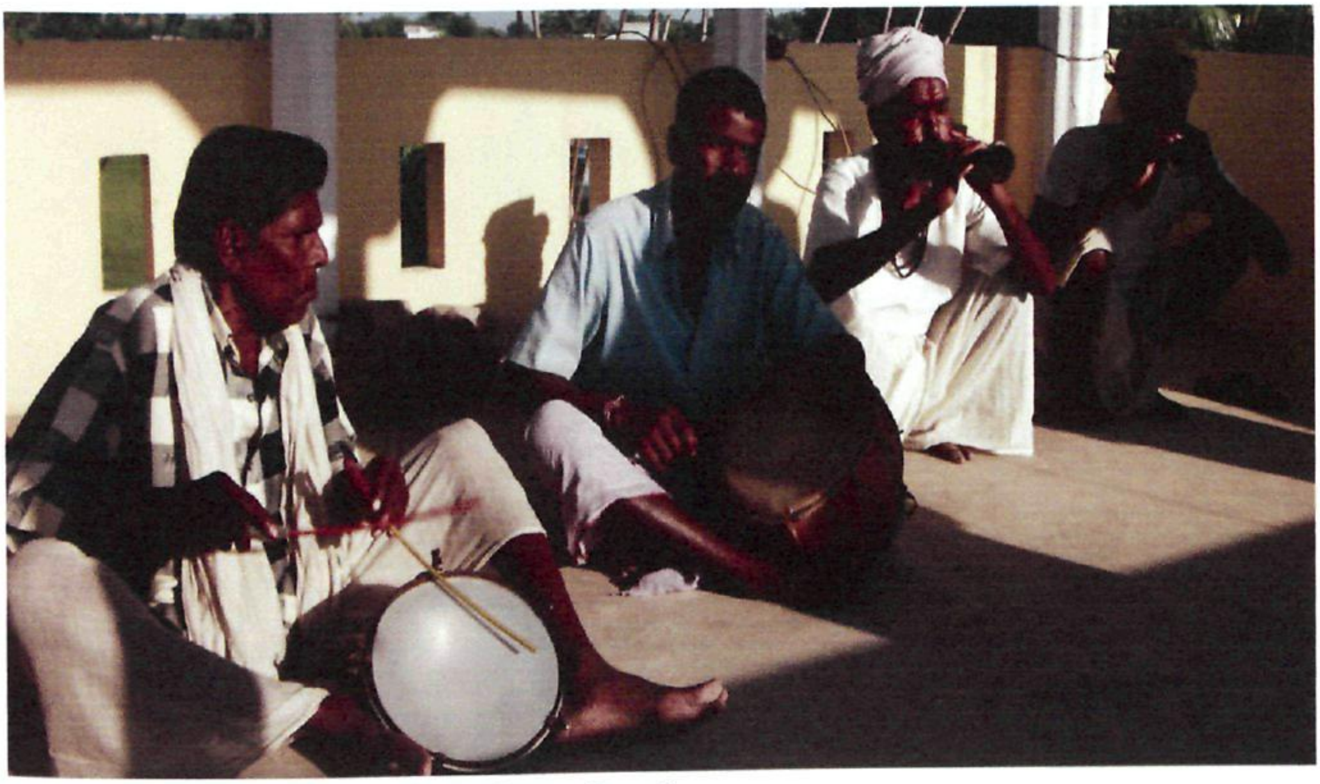

ढोला-पिपही – 2

मिथिला का लोकवाद्य रसनचौकी वादन एक पारंपरिक प्रदर्शनकारी कला है। संभवत: यह कला देश के प्राचीनतम लोक कालाओं में से एक है। इसके वादक मिथिला के क्षेत्र चमार जाति के लोग होते हैं। यह इस जाति का पारम्परिक जातिगत व्यवसाय है। प्राचीन समाज में कर्म के आधार पर वर्गीकृत जाति व्यवस्था में चमार जाति के लोगों के जीवन-यापन का प्रमुख साधन रसनचौकी वादन ही रहा है। इसमें फूँक कर बजाने वाला कारा, पीपही, संभवत: जो वर्तमान काल का शहनाई जैसा होता है, और पीटकर बजाने वाले वाद्य में से तबली, डिग्गी, खुरदक आदि है।

रसनचौकी वादन का मिथिला के समाज में धार्मिक मान्यता के साथ शुरू हुआ। मिथिला सीता की जन्मभूमी है और यहाँ के लोक जीवन और लोकाचार में प्रत्येक स्तर पर आज भी सीता विद्यमान है। जो मिथिला के लोकाचार में जाति, धर्म, संप्रदाय आदि की सीमा से परे है। चूंकी इस वाद्य परंपरा की उत्पति सीता के जन्म से है और इसे आवाहन संगीत के रूप में समाज में मान्यता प्राप्त है इसलिए इसे मांगलिक कार्य, खासकर भगवती के आवाहन के लिए आवश्यक रूप से बजाया जाता है। यह रपरंपरा आदि काल से चली आ रही है। संस्कार से संबन्धित किसी प्रकार का आयोजन इसके वादन के बिना सम्पूर्ण नहीं माना जाता है।

प्राचीन काल से ही मिथिला को बौद्धिक रूप अग्रणी माना जाता रहा है। इस क्षेत्र की बौद्धिकता इसके लोक तत्वों में देखने को मिलता है। इसी लोकाचारों में से एक लोक तत्व है रसनचौकी वादन। इसका अपना वैज्ञानिक प्रभाव भी है। मिथिला के सामाजिक जीवन में हर क्षण व हर भावना के लिए अलग से गीत संगीत का प्रावधान है। इन प्रावधानों के पीछे भौगोलिक वातावरण, दैनिक चर्या आदि है। इस सामाजिक-वैज्ञानिक ज्ञान का अनुशीलन करने में रसनचौकी एक माध्यम का काम भी करता है। रसनचौकी वादन के अदृश्य और अमूर्त ज्ञान परंपरा से स्थापित सामाजिक प्रथा की गूढ़ता इसमें समाहित है। इसके विभिन्न धुनों में समाहित लोक तत्वों के सार में मिथिला के रसनचौकी वादन परम्परा लोक व पारम्परिक कला है। इसमें दो तरह के वाद्य यंत्रों-मूंह से फूंककर व पीटकर, का प्रयोग किया जाता है। मूंह से फूंककर बजाए जाने वाले वाद्य कारा व पीपही है तथा हाथ से पीटकर बजाया जाने वाला वाद्य डिग्गी, तबली, खुरदक, टीमकी आदि हैं। ये सभी पारम्परिक वाद्यों का निर्माण मिथिला के जाति विशेष ही कराते हैं। यह वाद्य निर्माण इन विशेष जातियों का अपना जातिगत पारम्परिक शिल्प कौशल है। डिग्गी, तबली, खुरदक, टीमकी आदि मिट्टी के कटोरानुमा वाद्य है जिसे कुम्हार जाति के लोग कच्चे चिकनी

मिट्टी से बनाकर आबा (भट्ठी) में पकाकर बनाते है। इसे आम कुम्हार नहीं बना सकता है। इसे बनाने के लिए विशेष अनुभव की आवश्यकता होती है। फिर इसे छबाते हैं। इसी प्रकार कारा व पीपही लकड़ी का बना होता है। इसे बनाने के लिए मिथिला के ही बढ़ई जाति के लोग गमहारी आदि की लकड़ी का इस्तेमाल कराते हैं। इसे बनाने में कौन और किस प्रजाति के लकड़ी का इस्तेमाल होगा और उस पेड़ की उम्र क्या होगी यह भी भी बढ़ई अपने अनुभव के आधार ही ढूँढता है। यह इसके गुणवत्ता को तय करता है। रसनचौकी वाद्य समूह के वाद्यों का निर्माण मिथिला के पारम्परिक शिल्प कौशल के बिना संभव नहीं है।

<u>रसनचौकी वाद्य से बजाया जाने वाला प्रमुख गीत –</u>

मिथिला माता सीता का जन्म स्थल होने के कारण इस भू-भाग को सिद्ध पीठ के रूप में मान्यता है। तथा यहाँ सीता लोक जीवन के हर स्तर पर लगभग सभी सामाजिक मान्यता में आज भी मौजूद हैं। यहाँ तक की हर लड़की को सीता के रूप में देखा जाता है तथा हर दूल्हे को राम। चाहे वह किसी भी जाति का हो। यहाँ के संस्कार गीतों को समझने से इस बिन्दु को समझा जा सकता है। दूसरी तरफ मिथिला के संस्कार गीतों में विद्यापति की रचना के बिना सोचा भी नहीं जा सकता है।

सीता के जन्म से शुरू रसनचौकी वादन परंपरा में भी मुख्य रूप से विद्यापति के प्रमुख गीतों का ही सर्व प्रमुख स्थान है। अनुष्ठाणिक कार्य पर मंगल वाद्य के रूप में बजने वाली रसनचौकी में भी मुख्य रूप से प्रचलित प्रमुख बजने वाली गीत इस प्रकार है:

1. जय-जय भैरवि असुर भयाउनि।
   पशुपति भामिनी माया।
   सहज सुमति कर दिय' गोसाउनि।

अनुगति गति तुअ पाया।
वासर रैनि सबासन शोभित।
चरण चन्द्रमणि चूड़ा।
कतओक दैत्य मारि मुख मेलल।
कतओ उगिलि कएल कूड़ा।
सामर बरन नयन अनुरंजित।
जलद जोग फुलकोका।
कट-कट विकट ओठ पुट पांडरि।
लिधुर फेन उठ फोंका।
घन-घन-घनन घुंघरू कत बाजय।
हन-हन कर तुअ काता।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक।
पुत्र बिसरू जनि माता।

जय-जय भैरवि असुर भयाउनि।
पशुपति भामिनी माया।

2. जगदम्ब अहीं अबिलम्ब हमर

हे माय आहाँ बिनु आश ककर,

जँ माय आहाँ दुख नहिं सुनबई

त जाय कहु ककरा कहबै।

करु माफ जननी अपराध हमर
हे माय आहाँ बिनु आश ककर।
हम भरि जग सँ ठुकरायल छी
माँ अहींक शरण में आयल छी।
देखु हम परलऊँ बीच भमर
हे माय आहाँ बिनु आश ककर।
काली लक्षमी कल्याणी छी
तारा अम्बे ब्रह्माणी छी।
अछि पुत्र-कपुत्र बनल दुभर

हे माय आहाँ बिनु आश ककर।

जगदम्ब.....

3. रुसि चलली भवानी तेजि महेस

कर धय कार्तिक कोर गनेस।

तोहे गउरी जनु नैहर जाह

त्रिशुल बघम्बर बेचि बरु खाह

त्रिशुल बघम्बर रहओ बरपाय

हमे दुःख काटब नैहर जाए

देखि अयलहुं गउरी, नैहर तोर

सब कां पहिरन बाकल डोर

जनु उकटी सिव, नैहर मोर

नाँगट सओं भल बाकल-डोर

भनइ विद्यापति सुनिअ महेस

नीलकंठ भए हरिअ कलेश।

4. लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ

गरदनि लगा लीचड माँ

हे माँ गरदनि लग लीचड माँ

हम सब छी धीया-पूता आहाँ महामाया

आहाँ नई करबै त करतै के दाया

ज्ञान बिनु माटिक मुरति सन ई काया

तकरा जगा दिया माँ

लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ

गरदनि लगा लीचड माँ

कोठा-अटारी ने चाही हे मइया
चाही सिनेह नीक लागै मड़ैया
ज्ञान बिनु माटिक मुरुत सन ई काया
तकरा जगा दिया माँ.....

आनन ने चानन कुसुम सन श्रींगार
सुनलऊँ जे मइया ममता अपार
भवन सँ जीवन पर दीप-दीप पहार भार
तकरा हटा दिय माँ.....

लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ
गरदनि लगा लीचड माँ
सगरो चराचर अहींकेर रचना
सुनबई अहाँ नै त सुनतै के अदना
भावक भरल जल नयना हमर माँ
चरनऊ लगा लीचड माँ.....

लाले-लाले आहुल के माला बनेलऊँ
गरदनि लगा लीचड माँ

भगवती के गीत के अलावे महादेव के पारंपरिक गीतों को रसनचौकी वाद्य द्वारा बजने वाला प्रमुख गीत हैं -

1. आजु नाथ एक व्रत महा सुख लागल हे।
तोहे सिव धरु नट भेस कि डमरू बजाबह हे। ।
तोहे गौरी कहैछह नाचय हमें कोना नाचब हे।।
चारि सोच मोहि होए कोन बिधि बाँचब हे।।
अमिअ चुमिअ भूमि खसत बघम्बर जागत हे।।
होएत बघम्बर बाघ बसहा धरि खायत हे।।
सिरसँ ससरत साँप पुहुमि लोटायत हे ।।

कातिक पोसल मजूर सेहो धरि खायत हे।।
जटासँ छिलकत गंगा भूमि भरि पाटत हे।।
होएत सहस मुखी धार समेटलो नही जाएत हे।।
मुंडमाल टुटि खसत, मसानी जागत हे।।
तोहें गौरी जएबह पड़ाए नाच के देखत हे।।
भनहि विद्यापति गाओल गाबि सुनाओल हे।।
राखल गौरी केर मान चारु बचाओल हे।

2. कखन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ।
दुखहि जनम भेल दुखहि गमाओल
सुख सपनहु नहि भेल हे भोला ।
एहि भव सागर थाह कतहु नहि
भैरव धरु करुआर ;हे भोलानाथ ।
भन विद्यापति मोर भोलानाथ गति
देहु अभय बर मोहि, हे भोलानाथ।

3. गौरा तोर अंगना।
बर अजगुत देखल तोर अंगना।
एक दिस बाघ सिंह करे हुलना ।
दोसर बरद छैन्ह सेहो बौना।।
हे गौरा तोर .... ।
कार्तिक गणपति दुई चेंगना।
एक चढथि मोर एक मुसना।।
हे गौर तोर .... ।
पैंच उधार माँगे गेलौं अंगना ।

सम्पति मध्य देखल भांग घोटना ।।
हे गौरा तोर .... ।

4. हम नहि आजु रहब अहि आँगन
जं बुढ होइत जमाय, गे माई।
एक त बैरी भेल बिध बिधाता
दोसर धिया केर बाप।
तेसरे बैरी भेल नारद बाभन ।
जे बुढ अनल जमाय। गे माइ ।।
पहिलुक बाजन डामरू तोड़ब
दोसर तोड़ब रुण्डमाल ।
बड़द हाँकि बरिआत बैलायब
धियालय जायब पराय गे माइ । ।
धोती लोटा पतरा पोथी
सेहो सब लेबनि छिनाय।
जँ किछु बजताह नारद बाभन
दाढ़ी धय घिसियाब, गे माइ। ।
भनइ विद्यापति सुनु हे मनाइनि
दृढ करू अपन गेआन ।
सुभ सुभ कय सिरी गौरी बियाहु
गौरी हर एक समान, गे माइ।।

5. भोलेनाथ दिगम्बर दानी किए बिसरायल छी
दुनियाँ सऽ ठोकरायल छी
जे सभ गेल अहाँक द्वार, क्यो नहि भेल विमुख सरकार
बाबा हमरे बेर से भांग खाय भकुआयल छी

बाबा धरब अहाँपर ध्यान, पूजब शिवशंकर भगवान
बाबा अहाँक चरण मे हम सब लेपटायल छी
जेहन कातिक-गनपति, तेहने हम अयलहुँ शरणागत
बाबा राखी चाहे बुराबाटी, आब हम थाकल छी
की हेत अयलहुँ द्वार, किछु नहि पूछै छी सरकार
बाबा प्रेम मगन रस भांग पीबि मन्हुआयल छी

6. पूजा के हेतु शंकर आयल छी हम पुजारी
जानी ने मंत्र-जप-तप, पूजा के विधि ने जानी
तइयो हमर मनोरथ, पूरा करू हे दानी
चुप भए किए बइसल जी, खोलू ने कने केबारी
बाबा अहाँके महिमा, बच्चेसँ हम जनइ छी
दर्शन दिअऽ दिगम्बर, दर्शन केर हम भिखारी
हे नाथ हम अनाथे, वर दय करू सनाथे
मिनती करू नमेश्वर, कर जोड़ि दुनू हाथे
डामरु कने बजाउ, गाबइ छी हम नचारी

7. गे माई हम नहि शिव सँ गौरी बिआहब, मोर गौरी रहती कुमारी
गे माई भूत-प्रेत बरिआती अनलनि, मोर जिया गेल डेराइ
गे माइ गालो चोकटल, मोछो पाकल, पयरोमे फाटल बेमाइ
गे माइ गौरी लए भागब, गौरी लए जायब, गौरी लए पड़ायब नइहर
गे माइ भनहि विद्यापति सुनू हे मनाइनि, इहो थिका त्रिभुवननाथ
शुभ-शुभ कए गौरी के बियाहू, तारू होउ सनाथ गे माई

8. सभहक दुख अहाँ हरै छी भोला, हमरा किए बिसरै छी यो
हमहूँ सेवक अहीं के भोला, कोनो विधि निमहै छी यो
कपारो फूटल, बेमायो फाटल, किन्तु हम चलै छी यो
द्वारे ठाढ़ अहांके हमहूँ, पापी जानि टारै छी यो
सेवक अहाँक पुकारि रहल अछिद्व झाड़खण्ड बैसल छी यो
आबो कृपा करू प्रभु हमरा पर, दुखिया देखि भुलै छी यो
त्रिभुवन नाथ दिगम्बर भोला, सभटा अहाँ जनै छी यो।

धार्मिक अवसर पर अनुष्ठाणिक गीतों का ही प्रचलन रहा है परंतु अब रसनचौकी वादन का प्रदर्शन समाज से बाहर निकलकर प्रदर्शनकारी कला के उत्सव आदि में भी आमंत्रित किया जाने लगा है। इन स्थानों पर रसनचौकी वादन में नया-नया धुन सुनने को मिल जाता है। इनामे मुख्य रूप से मिथिला के लोक व पारंपरिक गीत सुनने को मिलता है। इसमें बारहमासा, चौमासा, सोहर, सम्मारि, उदासी, समदाऊन, खेलौना, विवाह गीत, छमासा, बटगबानी, सलहेस, कारुख आदि के प्रमुख हैं। इसमे से कुछ प्रतिनिधि गीतों को यहाँ दिया जा रहा है :

<u>सोहर –</u>

1. देवकी यशोदा दुनू बहिनी कि दुनू सहोदर रे
ललना रे, मिथिला गोकुल दुइ नग्र कि ताहि बिच जमुना बहू रे
अहि पार देवकी नहाएल, ओहि पार यशोदा रे
ललना रे, दुनू केर भए गेल भेंट दुनू बतिआएल रे
कुशल-पूछय देवकी, यशोदा मुह तोहर मलीन हे

मुह तोहर मलीन बहिनी, वदन तोहर उदास हे

सैह सुनि देवकी के नोर खसु, बदन उदास भइ रे

ललना रे, सात पुत्र दैव देलनि, कंस हरि लेलनि रे

कंस छथि निरवंश, बालक नहि छनि दया धर्म यौ

तेहन वीर अवतार लेतनि, करत हुनको नाश यौ।

2. बाबा केर अंगना चानन गाछ उगल तरेगन रे
ललना रे ताहि अवसर होरिला जनम लेल पुत्र बड़ सुन्दर रे
भनसा करैत अहाँ सासु कि सेहो हंसि पूछथि रे
ललना रे पुतहु कओन-कओन फल खयलहुँ पुत्र बड़ सुन्दर रे
पहिने खयलहुँ नारिकेर तखन छोहारा रे
ललना रे तखन खयलहुँ दाड़िम फड़ पुत्र बड़ सुन्दर रे
मचिया बैसलि तोहें गोतनो कि सेहो हंसि पूछथि रे
गोतनो हे कौने व्रत तोहें कयलह कि पुत्र बड़ सुन्दर रे
गंगा पैसि नहयलहुँ हरिवंश सुनलहुँ रे
ललना रे कयलहुँ जे रवि उपवास कि पुत्र बड़ सुन्दर रे
घरबा नीपैते आहे ननदो कि सेहो हंसि पूछथि रे
भउजी हे ककरा-ककरा संग तों गेलह कि पुत्र बड़ सुन्दर रे
पहिने जे गेलहुँ देओर संग तखन ननदोसि संग रे
ललना रे तखन जे गेलहुँ पिया संग तैं पुत्र बड़ सुन्दर रे
जे इहो सोहर गाओल गाबि सुनाओल रे
ललना रे तिनको बास बैकुण्ठ से पुत्र फल पाओत रे

<u>भगवातीक गीत –</u>

1. भगवती होइयउ ने सहाय
   हम तऽ अबला नारी ना

पहिल फल मांगब मा हे
भाय रे भतीजबा
हम तऽ मंगबे करबै ना
दोसर फल मांगब मा हे
सासु रे ससुरबा
हम तऽ मंगबे करबै ना
तेसर फल मांगब मा हे
सिर के सिन्दुरबा
हम तऽ मंगबे करबै ना
चारिम फल मांगब मा हे
गोदी भरि पुत्र
हम तऽ मंगबे करबै ना
भगवती होइअउ ने सहाय
हम तऽ मंगबे करबै ना

<u>बटगबानी -</u>

1. नव जौबन नव नागरि सजनी गे
नव तन नव अनुराग
पहु देखि मोरा मन बढ़ल सजनी गे
जेहेन गोपी चन्द्राल
बाधल वृद्ध पयोनित सजनी गे
कहि गेलाह जीवक आदि
कतेक दिन हेरब हुनक पथ सजनी गे
आब बैसलऊँ जी हारि
हम परलऊँ दुख-सागर सजनी गे
नागर हमर कठोर
जानि नहिं पड़ल एहेन सन सजनी गे

दग्ध करत जीब मोर
धरम जयनाथ गाओल सजनी गे
कियो जुनि करय प्रीति
धैरज धय रहु कलावति सजनी गे
आज करत पहु रीती

2. कुंज भवन सएँ निकसलि रे रोकल गिरिधारी।
एकहि नगर बसु माधव हे जनि करु बटमारी।।
छोड कान्ह मोर आंचर रे फाटत नब सारी।
अपजस होएत जगत भरि हे जानि करिअ उधारी।।
संगक सखि अगुआइलि रे हम एकसरि नारी।
दामिनि आय तुलायति हे एक राति अन्हारी।।
भनहि विद्यापति गाओल रे सुनु गुनमति नारी।
हरिक संग कछु डर नहि हे तोंहे परम गमारी।।

सम्मरि –

1. पीपरक पात अकासहि डोलय शीतल बहय बसात यो
ताहि तर बाबा पलंगा ओछाओल सुतय पीताम्बर तानि यो
आइ हे माइ पर हे परोसिन, बाबा के दियनु जगाइ हे
जिनका घर बाबा कन्या कुमारि, सेहो कोना सूतल निश्चिन्त यो
जइयौ यौ अयोध्या नगरी राजा दशरथ हुनि राम यो
राजा दशरथ के चारि बालक छनि, एक श्यामल तीन गोर यो
कारी देखि जुनि भुलबै यो बाबा, कारी के तिलक चढ़ायब यो

समदाऊन -

1. बड़ रे जतनसँ सिया धिया पोसलहुँ
सेहो रघुवंशी नेने जाय
आगू-आगू रघुबर, पाछ्रू-पाछ्रू डोलिया
ताहि पाछु लक्षुमन भाय
कथी केर डोलिया, केहन ओहरिया
कि लागि गेल बतिसो कहार
चनन केर डोलिया, सबुज ओहरिया
कि लागि गेल बतिसो कहार
लऽ दऽ निकसल विजुबन कहरिया
जाहि वन ने अपन परार
केओ जे कानय राजमहल मे
केओ कानय दरबार
केओ जे कानय मिथिला नगर मे
जोड़ीसँ बिजोड़ी केने जाय
आजु धिया कोना माय बिनु रहती
छने-छने उठती चेहाय

2. बाबा केर अंगनामे एलै कहरिया, सूनू बाबा मिनती हमार
एक बेर फेरलहुँ बेटी दुइ बेर फेरलहुँ, तेसर बेर फेरलो ने जाय
साँठू हे आमा पउती पेटरिया, हाँकू बाबा गाय महींस
आमाकेँ कानबे नगर लोक कानय, बाबा के कानबे दरबार
भइया के कानबे भीजल चदरिया, भउजी केर हृदय कठोर
किए हम आहे भउजो, नून तेल हेरायल, किए कोठी फोड़ल तोर

नहि अहाँ आहे ननदो, नून तेल हेरेलौं, नहि फोड़ल कोठी मोर

भइया दुलारू, बाबा आमां के दुलारू, तैं अहाँ बैरिन मोर

सलहेस गीत –

सुमिरनमा आइ सुमिरन, सुमिरन हम करै छी
सुमिरन आइ सुमिरन आ सुमिरन हम करै छी
मैया ने गयऽ।
प्रथम सुमिरऽऽ नमा सुमिरनमा
आब प्रथम सुमिरन करै छी
गुरू के हौ चरनमामे
प्रथम सुमिरन करै छी
गुरू के चरणीयामे नै गयऽऽ।

अन्य पारंपरिक गीत

1. कौने बाबा साजल आजन बाजन
   कौने बाबा साजू बरिआत हे
   कौने बाबा साजथु हरिअर सुगबा
   सुगा लए जायब बरिआत हे
   बड़का बाबा साजल आजन बाजन
   मझिला बाबा साजू बरिआत हे
   छोटका बाबा साजथु हरिअर सुगा
   सूगा लए जायब बरिआत हे
   कहमा बैसायब बरिआत हे
   कसहमा बैसाब हरिअर सूगा
   सूगा लए आयब बरिआत हे
   पोखरि बैसायब आजन बाजन

दुअरे बैसायब बरिआत हे
पिंजड़े बैसायब हरिअर सूगा
सूगा लए जायब बरिआत हे
कथी लए बुझायब आजन बाजन
कथी लए बुझायब बरिआत हे
कथी लए बुझायब हरियर सूगा
सूगा कथी लए बुझायब जमाइ हे
टारा लए बुझायब आजन-बाजन
धोती लए बुझायब बरिआत हे
फल लए बुझायब हरियर सूगा
बेटी लए बुझायब जमाई हे
एहन जमइया कतहु ने देखल
सूगा लए आयल बरिआत हे

2. जेठ मास अमावस सजनी गे
सभ धनी मंगल गाउ
भूषण वसन जतन कऽ सजनी गे
रचि-रचि अंग लगाउ
काजर-रेख सिनुर भल सजनी गे
पहिरथु सुबुधि सेयानि
हरखित चलल अछयबट सजनी गे
गाबति मंगल गान
घर-घर नारि हकारल सजनी गे
आदरसँ संग गेलि
आइ छिऐ बरिसति सजनी गे
तैँ आकुल सभ भेलि
घुमि-घुमि अछिंजल ढ़ारल सजनी गे
बांटल अछत सुपारि

फतुरी आसिस देल सजनी गे
जीबथु दुलहा-दुलारि

इसके अलावे अन्य लोक व पारंपरिक गीतों का वादन भी रसनचौकी वाद्य के माध्यम से मिथिला में होता रहा है।

रसनचौकी वादक कलाकारों की वर्तमान स्थिति -

मिथिला का यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की वर्तमान स्थिति चिंताजनक है। इसके विलुप्त होने से सामाजिक सनरचना परंपरा व आस्था पर कठोर आघात पहुच सकता है। रसनचौकी बजाने वाले अनुसूचित जाति वर्ग के लोग है। सामाजिक ढांचा कुछ इस प्रकार का था की इस जाति के लोगों का मुख्य कार्य रसनचौकी बजाना होता था और यही इनका मुख्य व्यवसाय भी था। कभी इस जाती के सभी व्यक्ति पारंपरिक कलाकार होते थे वहीं आज रसनचौकी वादय दल पूरा करने में दस गाँव मिलाकर भी एक दल तैयार नही हो पाता है। वर्तमान में रसनचौकी विलुप्त होने के कगार पर है।

मिथिला क्षेत्र बिहार व नेपाल में समान रुप से फैला हुआ है। रसनचौकी पर किए गये प्रांरभिक अध्ययन से पता चलता है कि मिथिला के हर दस कोस पर भाषा के टोन के साथसाथ- रसनचौकी के लय भौगोलिक प्रभाव पड़ा है। बिहार के मिथिला के मधुबनी क्षेत्र, कोसी क्षेत्र्, भागलपुर क्षेत्र, देवघर (झारखण्ड) क्षेत्र के साथ नेपाल के पश्चिमी, जनकपुर व पूर्वी क्षेत्रें में रसनचौकी का प्रयोग समान है। कुछ अन्तर को छोड़कर वाद्ययंत्रों भी लगभग समान है। प्राचीन काल में जहां चमार जाति के सभी लोग इन वाद्रययंत्रें में वादक होते थे वहीं कुछ ही व्यक्ति है जो इसे बजाते है। मधुबनी जिला के सिनौल में बच्चादास व भटसिमर के महेन्द्र राम, दरभंगा

के राजिन्दर राम, जनकपुर के ठीठर मोची, सुपौल के चलितर आदि प्रमुख व्यक्ति है जो आज भी खुद बजाते है और बच्चों को सिखाना चाहते है। बिहार के कुछ जिलों तथा पंचायतों का क्रमबद्ध आकड़ा कुछ लिया गया जिसमे कलाकारों की सूची तैयार किया गया है। कुछ जिला स्तरीय, कुछ पंचायत स्तरीय रसन चौकी वाद्य की जानकारी प्राप्त की गई है।

रसनचौकी वादक कलाकार मिथिला के हिन्दू संप्रदाय के चर्मकार (चमार) जाति के पुरुष हैं। यह वाद्य पारंपरिक रूप से केवल पुरुष ही बजाते हैं। ये लोग दैनिक मजदूर होते हैं। इनका प्रमुख व्यवसाय खेतिहर मजदूरी के अलावे अपने ही गाँव में अन्य दैनिक मजदूरी जैसे ईंट के भटठे पर काम आदि करते हैं। समाज में जानवरों के मर जाने पर उसका चमड़ा निकालने काम भी कराते थे जो आज-कल बहुत ही कम देखने को मिलता है। चमार में मुख्य रूप से चार उपजाति होते हैं, इनमें "मोची" और "राम" उपनाम वाले ही केवल रसनचौकी बजाते हैं। कालांतर में कुछ लोग "महरा", "दास" आदि उपनाम भी रखने लगे। इनका प्रमुख व्यवसाय रसनचौकी वादय लुप्त होने के कगार पर जाने से कलाकारों में अत्यधिक क्षोभ व उदासीनता बढती जा रही है। कलाकारों के पुर्वज इन वादय यंत्रों के सहारे अपना जीवन यापन करते आ रहे थे। आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो जाने के कारण कलाकारों के मन में खिन्नता बढती जा रही है। बढते मंहगाई के दौर में कलाकारों के परिवार में आर्थिक कमी का आभास आने से अपने नये पीढी को इस वादय यंत्रों से पृथक कार्य-नौकरी खेती, मजदुरी आदि करने को प्रेरित कर रहे हैं। इन कलाकारों का मानना है, कि इन वादयों के माध्यम से समाज में कई प्रकार की बिमारी जीव जन्तु आदि दूर रहा करते थे। यह मिथिला के समाज में लोक-विश्वास है। सनचौकी के कलाकारों का कलारुपों की दिशा बदलती जा रही है। कुछ कलाकार नाच में तो कुछ कलाकार संगीतात्मक अन्य दिशाओं के तरफ अग्रसर हो रहे हैं। क्योंकि

उसमें तत्काल आर्थिक लाभ प्राप्त होने पर पारिवारिक भरण पोषण किसी तरह चल जाता है। परन्तु परिश्थितिवश अपनी मौलिक परंपरा को भुलते जा रहे हैं। कलाकारों के मन में भी यह खेद है, कि हमारी पुर्व कालिक वादय यंत्र हमसे दुर होते जा रहे हैं लेकिन बेबस कलाकार वर्तमान में कल्पना मात्र ही करके रह जाते हैं। चुकि समाज में इन वादयों की प्रधानता घटती जा रही है। इत्यादि से निम्न प्रकार की सामाजिक हानि होते जा रही है। कलाकारों में असंतोष, आर्थिक कमी, सामाजिक भेदभाव, इन कलाओं के प्रति खिन्नता, कई कलाकारों में बेरोजगारी, सांस्कृतिक पंरपरा कला का ह्रास होता जा रहा है। कलाकार लोग चाहते हैं कि उन्हे समाज व किसी संस्था या सरकार द्वारा पुर्ण सहानुभूति प्राप्त हो तो पुनः
उस लोककला रसनचौकी वादय को सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था में पुनजीर्वित रख सकते हैं। और अपने आने वाले पीढी को तथा समाज में और कई इच्छुक व्यक्ति को इस कला का ज्ञान देकर इसमें प्रेरित कर सकते है। जिससे हमारी मौलिक परंपरा चिरस्थायी रह सकता है।

मिथिला में रसनचौकी वादन के अवसर व स्थान :

रसनचौकी वादन वैसे तो अनुष्ठाणिक आयोजन के अवसर पर किया जाता है, परंतु रसनचौकी के आभाव में ढ़ोल-पिपही ही बाजा देते हैं, परंतु मिथिला क्षेत्र में आज भी कुछ गाँव हैं ऐसे हैं जहां स्थायी रूप से विशेष सालाना आयोजन में रसनचौकी वादन होता ही है। तथा इसके लिए अलग से व्यवस्था भी की जाती है। इनमें से कुछ गांवों की सूची इस प्रकार है :

1. अंधराठाढी ; (बाचस्पति नगर)
2. कोईलख, राजनगर
3. देवहारी, बाबूबरही
4. मरूकिया, अन्धराठाढ़ी,

5. भटसिमर, राजनगर,
6. बेल्हबाड़, मधुबनी,
7. अड़ेर, बेनीपट्टी
8. शिवीपट्टी, राजनगर
9. सुगौना, राजनगर,
10. बाबूबबरही
11. विदुलिया, देवहार,
12. महथा, लदनियॉ
13. ग्राम- सहुरिया,
14. खरगबनी, बाबूबरही,
15. परसौनी, विस्फी,
16. दुदाही, बाबूबरही,
17. बलिराजपुर गढ़, बाबू बरही,
18. बडैल, खुटौना,
19. मौगलाहा, अंधराठाढ़ी,
20. रखवारी, झॅझारपुर,
21. हड़री, झॅझारपुर,
22. महरेल, झॅझारपुर,
23. मेटरस, घोघरडीहा,
24. बेलाही, पण्डौल,
25. बड़ा गॉव, पण्डौल
26. भगवतीपुर, रामपट्टी

27. चतरा-गोवरौरा, खजौली
28. दुलीपट्टी, जयनगर

रसनचौकी के कलाकारों की सूची :

कोसी नदी मिथिला क्षेत्र को दो असीम भागों में विभक्त करता है। कोसी नदी के पश्चिम के मिथिला क्षेत्र के कुछ भागों में अब तक किए कार्य के दौरान संकलित कलाकारों की सूची:

क्रम संख्या	रसनचौकी वादकों के नाम व उम्र	पता	अन्य विवरण
1	श्री घोघर राम, पिता स्व0 खुरखुरी राम 65 वर्ष	ग्राम- ठारही, वाया- अंधराठाढी, ज़िला मधुबनी	श्री घोघार राम रसनचौकी का प्रथम बाजा- कारा, जिसे मूह से फूंककर बजाया जाता है उसे बजाने माहिर हैं तथा समुदाय के बच्चों को सिखाते भी हैं।
2	सोमन राम पिता- स्व0 बदरी राम, 60 वर्ष	ग्राम- ठारही, वाया- अंधराठाढी, ज़िला मधुबनी	यह कलाकार कारा भी बजाते हैं, तथा सूर भी बजाते हैं।
3	श्री मखन राम, पिता- स्व0 भुलकुन राम, उम्र	ग्राम- ठारही, वाया- अंधराठाढी, ज़िला	रसन चौकी के सूर बजाते हैं।

		मधुबनी	
10	श्री सुक्कल राम, उम्र 80 वर्ष,	ग्राम – देवहारी, वाया पंडौल, ज़िला-मधुबनी	गुरू का नाम - स्व0 सोनाई राम। ये कारा बजाते है।
11	श्री मधुरी राम, उम्र 60 वर्ष,	ग्राम – देवहारी, वाया पंडौल, ज़िला-मधुबनी	गुरू का नाम - पिता स्व0 घूरन राम। यह कलाकार रिद्यम के रूप में तबली के जोड़ी बजाते हैं। इनके गुरु इनके पिता ही हैं।
12	श्री सैनी राम, उम्र 65 वर्ष,	ग्राम – देवहारी, वाया पंडौल, ज़िला-मधुबनी	गुरू श्री सोमाई राम हैं। कारा बजाते हैं।
13	जोगिन्दर राम, उम्र 75 वर्ष,	ग्राम- सुगौना, , ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू स्व0 राम चन्द्र राम हैं। ये पिपही बजाते हैं।
14	श्री शिव नारायण राम उम्र 55 वर्ष, पिता श्री जोगिन्दर राम।	ग्राम- सुगौना, , ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू व चाचा श्री अच्छे राम जी हैं। इनका उम्र वर्तमान में 80 वर्ष है। ये कारा व पिपही बजाते है।
15	श्री देव नारायण राम, उम्र 52 वर्ष, पिता श्री जोगिन्दर राम ।	ग्राम- सुगौना, , ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू चाचा अच्छे राम हैं । ये मुख्य रूप से रिद्यम-तासा बजाते हैं

			परंतु समय पड़ने पर डुमकी भी बजाते हैं
16	श्री ज्ञानचन्द्र राम, उम्र 70 वर्ष, इनके गुरू स्व0 बोकाई राम हैं।	ग्राम – मरूकिया, वाया-खजौली, ज़िला-मधुबनी	ये कारा बजाते है। इनके गुरू स्व0 बोकाई राम अपने कई पुस्तों से यह बाजा बजाते आ रहे थे। इनके कई शिष्य हैं।
17	श्री राम विलास राम, उम्र 60 वर्ष,	ग्राम – मरूकिया, वाया-खजौली, ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू स्व0 लक्ष्मी राम। यह कलाकार कारा बजाते हैं।
			इनके गुरू स्व0 लक्ष्मी राम जी की मृत्यु 103 वर्ष पर हुई। इनका कहना था कि हमारे 25 पुस्तों ने यह वादय यंत्रों को बजाकर जीवकोपार्जन किया था।
18	श्री जहर राम, उम्र 65 वर्ष,	ग्राम – मरूकिया, वाया-खजौली, ज़िला-मधुबनी	ये तबली जोड़ी रिद्यम बजाते हैं। इनके गुरू स्व0 मुनिलाल राम तबली तथा कारा भी बजाते थे। इनका कहना है की इनके गुरू जी के पुर्वज लोग राज दरभंगा में भी इन वादय यंत्रों को बजाया करते थे। दरभंगा के तत्कालीन

			राजा से कई पुरस्कार भी मिले हैं।
19	श्री सत्तन राम, उम्र 67 वर्ष।	ग्राम – मरूकिया, वाया-खजौली, ज़िला-मधुबनी	ये सुर बजाते हैं। इनके गुरू स्व0 लक्ष्मी राम जी कारा तथा सुर दोनो ही बजाते थे।
20	शोभित राम, उम्र 35 वर्ष	ग्राम – चन्दौना, वाया – जोगियारा, ज़िला- दरभंगा	ये सुर, ढ़ोल तथा भठिया बजाते हैं।
21	मोहम्मद काशीम, उम्र 45 वर्ष	ग्राम – चन्दौना, वाया – जोगियारा, ज़िला- दरभंगा	ये कारा बजाते हैं। यहाँ गौर करने वाली बात यह है कि इस गाँव सहित आस-पास के गाँव में रसनचौकी अपनी जाति और धर्म के बंधन को तोड़कर समाज में स्वीकृति बढ़नी शुरू हो चुकी है।
22	श्री कपुरचन राम, उम्र 60 वर्ष।	ग्राम – चन्दौना, वाया – जोगियारा, ज़िला- दरभंगा	ये डिगरी व बम बजाते हैं
23	श्री बहादुर पासवान, उम्र 55 वर्ष	ग्राम – चन्दौना, वाया – जोगियारा, ज़िला- दरभंगा	ये भठिया तथा ढ़ोल बजाते हैं।

24	मोहम्मद लालू, उम्र 57 वर्ष,	ग्राम – चन्दौना, वाया – जोगियारा, ज़िला- दरभंगा	ये कारा तथा ढ़ोल भी बजाते हैं।
25	श्री कुन्दन पासवान, उम्र 42 वर्ष	ग्राम – चन्दौना, वाया – जोगियारा, ज़िला- दरभंगा	ये खुरदक का पिपही या रसन चौकी का कारा और सुर भी बजाते हैं।
26	श्री जालदेव राम, उम्र 50 वर्ष	ग्राम – मौगलाहा, ज़िला- दरभंगा	उनके गुरू स्व0 खुषीलाल राम। ये कारा बजाते हैं। उनके गुरू सौ वर्ष तक यह बाजा बजाये थे। उनके भी सम्पुर्ण पुर्वज इन्हीं वादय यंत्रों से अपना भरण पोषण करते आये थे। वर्तमान में भी यह कलाकार अपना मौलिक परंपरा को चिरस्थायी रखते हेतु इसका वादन करते हैं।
27	श्री जगदीश राम, उम्र 60 वर्ष,	ग्राम – मौगलाहा, ज़िला- दरभंगा	इनके गुरू स्व. प्रेम राम हैं। ये कारा ही बजाते हैं। इनके गुरू स्व0 प्रेम राम जी ने भारत और नेपाल के कई कलाकारों को शिक्षा दिया है।
28	श्री पुलकित राम, उम्र	ग्राम – मौगलाहा,	इनके गुरू स्व0 प्रेम

	58 वर्ष	ज़िला- दरभंगा	राम। ये सुर बजाते है। इनके गुरू कारा तथा सुर तथा रिद्मम इन चारों वादय यंत्रों के ज्ञाता थे। उन्हें मिथिला में संगीत विषेषज्ञ के रूप में जाना जाता था।
29	श्री सत्तन राम, उम्र 65 वर्ष	ग्राम – मौगलाहा, ज़िला- दरभंगा	इनके गुरू स्व0 खुशीलाल राम ये रिद्मम बजाते हैं। जो मिट्टी के कटोरा तथा कराही नुमा बर्तन पर बकरी के खाल से छबाये हुये वादय यंत्रों को बजाते हैं। जिसे तबली जोड़ी या टिमकी तथा भठिया (बम) भी कहते हैं।
30	श्री परमेस्वर राम, उम्र 50 वर्ष, किये हैं। पिता स्व0 रामदेव राम	ग्राम-बाबूबरही, ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू श्री मुसहरू राम थे। ये भठिया या टिमकी बजाते हैं। इनके पिता स्व0 रामदेव राम एक अच्छे कलाकार माने जाते थे। स्व0 रामदेव राम के गुरू स्व0 भाई लाल राम उन्होंने भी लगभग सौ वर्ष तक इसका बादान किया।

31	श्री राम प्रसाद राम उर्फ मुसहरू राम, उम्र 70 वर्ष	ग्राम-बाबूबरही, ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू स्व0 जकन्तु राम तथा उनके गुरू स्व0 दुखरन राम थे। स्व0 दुखरन राम के गुरू स्व0 बहरू राम थे। इनकी सम्पूर्ण वंश इस वादय यंत्रों को बजाते आ रहे हैं। ये पिपही बजाते हैं।
32	श्री बंकर राम, उम्र 55 वर्ष इनके पिता स्व0 राम जी राम	ग्राम-बाबूबरही, ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू स्व0 अकलूराम थे। ये टिमकी या डिगरी, भठिया (बम) तथा पिपही भी बजाते हैं।
33	श्री अर्जुन राम, उम्र 40 वर्ष, इनके पिता स्व0 जगदीष राम थे।	ग्राम-बाबूबरही, ज़िला-मधुबनी	इनके गुरू स्व0 पिता रामजी राम तथा उनके गुरू स्व0 अकलू राम थे। ये गीत रचना करने वाले पिपही बजाते हैं। तथा समय-समय पर टिमकी भी बजाते हैं।
34	श्री राम फल राम, उम्र 55 वर्ष	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	ये अपने पिता प्राशिक्षण से प्राप्त किए हैं। ये लोग कारा तथा डग्गी बजाते हैं।

35	श्री मोती लाल राम, उम्र 60 वर्ष, पिता - स्व0 रघुनी राम	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	ये अपने पिता प्राशिक्षण से प्राप्त किए हैं। ये लोग कारा तथा डग्गी बजाते हैं।
36	श्री अषर्फी राम उम्र 50 वर्ष,	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	इनके गुरू स्व0 सोनाई राम व उनके गुरू स्व0 दरबारी दास थे। वे राजा महाराजा साहब के डयौढ़ी में रसन चौकी बजाते थे। इनके अनुसार दरबारी दास जी का गायन व रसन चौकी वादन के बिना दरभंगा महाराजाज के यहाँ कोई भी शुभ कार्य सम्पादित नहीं होता था।
37	श्री अषर्फी राम, उम्र 50 वर्ष	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	इनके गुरू स्व0 सोनाई राम व उनके गुरू स्व0 दरबारी दास थे।
38	श्री लष्करी राम, उम्र 55 वर्ष, पिता स्व0 बलदेव राम	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	इनके गुरू स्व0 कारी राम। यह कलाकार रसनचौकी के मूंह से फूँककर बजाने वाले तीनों वादय यंत्र कर बजाते हैं।
39	श्री मुनेश्वर राम, उम्र 60 वर्ष, पिता स्व0 सरयुग राम।	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	इनके गुरू स्व0 सोनाई राम (ग्राम-भटगामा)। ये कलाकार अपने पिता तथा गुरू से शिक्षा प्राप्त

			करके वर्तमान में कारा बजाते है।
40	श्री जगदेव राम, उम्र 50 वर्ष, पिता स्व0 मुनी राम,	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	पिता स्व0 मुनी राम, इनके गुरू स्व0 सोनाई राम। ये तबली, डुग्गी बजाते हैं। इन्हें कारा बजाने का भी ज्ञान प्राप्त है।
41	श्री विनोद राम, उम्र 35 वर्ष, पिता स्व0 रघुनी राम।	ग्राम सहुरिया, ज़िला- मधुबनी	इनके पिता स्व0 रघुनी राम तथा गुरू स्व0 सोनाई राम। ये तबली-डग्गी, टिमकी, भठिया, आदि वादय यंत्र बजाते है।
42	श्री मुनेस्वर राम (दास) उम्र-95 वर्ष, गुरु -स्व0 बतहु राम।	ग्राम - राजा बलि गढ़ (बलीराजगढ़), वाया – बाबुबरही, ज़िला – मधुबनी	ये पहले कारा बजाते थे फिर कुछ शिष्यों को यह शिक्षा देकर उनसे कारा बजवाने लगे। और स्वंय तबली और डग्गी बजाने लगे।
43	श्री राम प्रकाश, उम्र-45 वर्ष,	ग्राम-चतरा गोवरौरा जिला-मधुबनी	इनके गुरु व पिता श्री मुनेस्वर राम। ये कारा बजाते हैं तथा इन्हें रसनचौकी के सभी वादय यंत्रों का ज्ञान है।
44	श्री मौजेराम उम्र-96 वर्ष	ग्राम-चतरा गोवरौरा जिला-	यह कलाकार श्री मुनेस्वर दास जी के साथ

		मधुबनी	कारा बजाते थे।
45	श्री उदगार राम-उम्र 38 वर्ष,	ग्राम-चतरा गोवरौरा जिला-मधुबनी	उनके गुरु स्वयं पिता श्री मुनेस्वर राम यह कलाकार कारा बजाते हैं।
46	श्री दुखीराम, उम्र 65 वर्ष	ग्राम-चतरा गोवरौरा जिला-मधुबनी	ये रसनचौकी के सभी वाद्य बजाते हैं।
47	श्री बौकू राम, उम्र 60 वर्ष	ग्राम दुदाही-बाबूबरही-मधुबनी	इनके गुरु व पिता स्व0 बिहारी राम थे। स्व0 बिहारी राम के पिता-स्व0 गेनाई राम भी कारा बजाते थे। ये पिपही बजाते हैं। परन्तु इनके पिता व गुरु पिपही तथा टिमकी या भठिया भी बजाया करते थे।
48	श्री कैलू राम उम्र-65 वर्ष,	ग्राम-खैडा तिलई, झांझारपुर	इनके पिता स्व0 सौफी राम, थे। इनके गुरु: स्व. गोपी राम। ये टिमकी या भठिया भी बजाते हैं। इन्हें भी सभी वादय यंत्रों का ज्ञान है। खुरदक हो या रसनचौकी।
49	श्री रामप्रसाद राम (उर्फ मुसहरू राम) उम्र 58	ग्राम दुदाही-बाबूबरही-मधुबनी	इनके पिता स्व0 चुलहाई राम थे। स्व0

	वर्ष।		रामप्रसाद राम के गुरु के नाम स्व0 सोनाई राम था। ये पिपही व कारा भी बजा लेते हैं। इनके ऊपर के पीढी के लोग इसी वादय यंत्र पर ही निर्भर रहे हैं।
50	श्री परमेस्वर राम, उम्र- 45 वर्ष ।	ग्राम दुदाही-बाबूबरही-मधुबनी	इनके पिता व गुरु स्व0 राम देव राम थे। स्व0 रामदेव राम के गुरु स्व0 भाई लालराम थे। ये रिद्यम बजाते हैं। जिसे ये भठिया या बम भी कहते हैं।
51	श्री जगदेव राम (उर्फ दुखीराम) उम्र 55 वर्ष इनके पिता व गुरु स्व0 रामजी राम थे।	ग्राम दुदाही-बाबूबरही-मधुबनी	इनके पिता व गुरु स्व0 रामजी राम के गुरु स्व0 अकलुराम थे। ये टिमकी अर्थात डिगरी बजाते हैं। इनका सम्पूर्ण वंश इसी वादय यंत्रों पर निर्भर रहे हैं।
52	श्री रामजी राम, उम्र 70 वर्ष, पिता व गुरु स्व0 चुल्हाई राम।	ग्राम व पोस्ट परसौनी भाया -विस्फी, जिला मधुबनी	इनके पिता व गुरु स्व0 चुल्हाई राम। रसनचौकी के सभी वाद्य बजाते हैं।
53	श्री अवध महरा उम्र 45 वर्ष, इनके गुरु श्री सुवध महरा थे।	ग्राम - लदनिया, मधुबनी	ये तबली अर्थात रिद्यम बजाते हैं। वैसे रसनचौकी के सभी वादय यंत्र बजाना

			जानते हैं। परन्तु अपने समुह में अधिकतर रिधम बजाते हैं।
54	श्री बिहारी महरा, उम्र 50 वर्ष	ग्राम - लदनिया, मधुबनी	ये मुंह से बजाने वाले वादय कारा बजाते हैं।
55	श्री घूटर महरा, उम्र 40 वर्ष	ग्राम - लदनिया, मधुबनी	ये मुंह से फुककर बजाने वाले वादय यंत्र कारा बजाते हैं।
56	श्री पूरन महरा, उम्र 45 वर्ष	ग्राम - लदनिया, मधुबनी	ये मुंह से फुककर बजाने वाले वादय यंत्र सुर बजाते हैं।
57	श्री महेंद्र राम, उम्र 65 वर्ष पिता व गुरु श्री मोहन राम	ग्राम – भटसीमर, राजनगर, ज़िला - मधुबनी	ये कारा बजाते हैं
58	श्री होरिल पासवान, उम्र 50 वर्ष, पिता – जामुन पासवान	ग्राम – भटसीमर, राजनगर, ज़िला - मधुबनी	झाल बजाते हैं तथा सुर सीख रहे हैं।
59	श्री कमल राम, पिता – ढोढाई राम, उम्र 67 वर्ष	ग्राम – भटसिमर, थाना - राजनगर, ज़िला - मधुबनी	ये कारा बजाते हैं
60	श्री बिलट राम, उम्र – 75 वर्ष	ग्राम – सुगौना, थाना - राजनगर,	ये मुंह से फुककर बजाने वाले वादय यंत्र कारा बजाते हैं।

		ज़िला – मधुबनी	
61	श्री राजदेव राम, उम्र – 75 वर्ष , पिता व गुरु – श्री बिलट राम	ग्राम – सुगौना थाना - राजनगर, ज़िला – मधुबनी	ये तबली बजाते हैं
62	श्री घोघाई राम, उम्र 70 वर्ष	ग्राम – चपाही, थाना - राजनगर, ज़िला – मधुबनी	ये खुरदक का पिपही या रसन चौकी का कारा और सुर भी बजाते हैं।
63	श्री विलास राम, उम्र – 55 वर्ष, पिता व गुरु – ठीठर राम	ग्राम – भटसिमर, थाना - राजनगर, ज़िला - मधुबनी	ये खुरदक का पिपही या रसन चौकी का कारा और सुर भी बजाते हैं।
64	श्री स्वरूप लाल राम, उम्र 62 वर्ष, पिता व गुरु – रती राम	ग्राम – भटसिमर, थाना - राजनगर, ज़िला - मधुबनी	ये खुरदक का पिपही या रसन चौकी का कारा और सुर भी बजाते हैं।
65	श्री बुधन राम, उम्र-70 वर्ष	ग्राम – खेड़ा , झंझारपुर	ये तबली बजाते हैं
66	सूरत राम	ग्राम – खेड़ा , झंझारपुर	ये तबली बजाते हैं
67	श्री सीतींदर राम, उम्र 65 वर्ष	ग्राम – तिलई , झंझारपुर	ये मुंह से फुककर बजाने वाले वादय यंत्र कारा बजाते हैं।
68	श्री जौलू राम	ग्राम हरडिया	ये खुरदक का पिपही या

	उम्र 75 वर्ष	ज़िला- सीतामढ़ी	रसन चौकी का कारा और सुर भी बजाते हैं।
69	श्री बिकाऊ राम उम्र 58 वर्ष	ग्राम हरडिया ज़िला- सीतामढ़ी	ये सुर बजाते हैं
70	श्री राम परकास राम, उम्र 50 वर्ष,	ग्राम – भूपट्टी वाया - बाबू बरही ज़िला - मधुबनी	ये सुर बजाते हैं
71	श्री राम बहादुर राम, उम्र 59 वर्ष, पिता राजेंदर राम	ग्राम हरडिया ज़िला- सीतामढ़ी	ये मुंह से फुककर बजाने वाले वादय यंत्र कारा बजाते हैं।
72	श्री राम कुमार राम, उम्र 56 वर्ष पिता व गुरु स्व0 बिलेछ्न राम	ग्राम – कारा भीम, प्रखण्ड - परसौनी ज़िला- सीतामढ़ी	ये खुरदक का पिपही या रसन चौकी का कारा और सुर भी बजाते हैं।
73	श्री बेचन राम , उम्र 72 वर्ष पिता व गुरु स्व0 बोतल राम	ग्राम – कनहौली प्रखण्ड - परसौनी ज़िला- सीतामढ़ी	ये खुरदक का पिपही या रसन चौकी का कारा और सुर भी बजाते हैं।
74	श्री रामजी राम, उम्र 70 वर्ष पिता व गुरु स्व0 बुधन राम	ग्राम हरडिया ज़िला- सीतामढ़ी	ये कारा बजाते हैं
75	श्री राजेन्द्र राम, उम्र 63 वर्ष पिता व गुरु स्व0 सोखींदार राम	ग्राम – भटसिमर, थाना - राजनगर, ज़िला - मधुबनी	ये कारा बजाते हैं
76	श्री नथुनी राम, उम्र 59 वर्ष पिता व गुरु स्व0	ग्राम – भटसिमर,	ये सुर बजाते हैं

	कमल राम	थाना - राजनगर, ज़िला - मधुबनी	
77	श्री राम चन्द्र राम	ग्राम - अकहरी थाना – लदानियाँ ज़िला मधुबनी	आवाहन संगीत रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
78	श्री उतीम लाल राम	ग्राम – सुककी प्रखण्ड – खजौली ज़िला – मधुबनी	आवाहन संगीत रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
79	श्री राजेन्द्र प्रसाद राम	ग्राम – मैबी ज़िला – मधुबनी	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
80	श्री विजय राम	ग्राम – नारंगा वाया - परिहार ज़िला - सीतामढ़ी	आवाहन संगीत रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
81	श्री देवरंजन राम	ग्राम – गीदधा फुलवारिया वाया - रानी सैदपुर ज़िला – सीतामढ़ी पिन – 843128	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं

82	श्री शिवशरण राम	ग्राम –सुरसंड, ज़िला - सीतामढ़ी	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
83	श्री उमेश राम	ग्राम – हेमन पुर, मोहनपुर, प्रखण्ड - बखरी ज़िला – बेगुसराय, पिन 848201	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
84	श्री राजकुमार राम	ग्राम – शोखारा वाया – टेघरा ज़िला - बेगुसराय, पिन 851112	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
85	श्री महादेव राम	ग्राम – नरसादा प्रखण्ड – कांटी ज़िला – मुजफ्फरपुर पिन - 843109	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
86	श्री राजकुमार राम	ग्राम – चैनपुर प्रखण्ड – माड़वान ज़िला – मुजफ्फरपुर पिन - 843113	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
87	श्री रधुनाथ राम	ग्राम – द्वारिकापुर	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े

		प्रखण्ड – मरौल ज़िला – मुजफ्फरपुर	समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
88	नरेश राम	गरीबा प्रखण्ड – पारु ज़िला – मुजफ्फरपुर 843112	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
89	श्री बच्चन राम	ग्राम – वैद्यनाथ पुर वाया – साहेबगंज ज़िला मुजफ्फर पुर 843125	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं
90	श्री रामदेव राम	ग्राम – बसुदेबा प्रखण्ड – सरैया ज़िला मुजफ्फरपुर 843106	रसनचौकी वादन से पारम्परिक रूप से जुड़े समुदाय के जागरूक सदस्य हैं

रसनचौकी आकडा सृजन कार्य के दौरान लिए गए कुछ चित्र –

धूल पिपही का खुर्दक – 1

धूल पिपही का खुर्दक – 2

ढोल पिपही का पिपही

कारा (रसनचौकी)

कारा (रसनचौकी) – 2

कारा

तबली का दायाँ

रसनचौकी के तबली का बायाँ (डुग्गी)

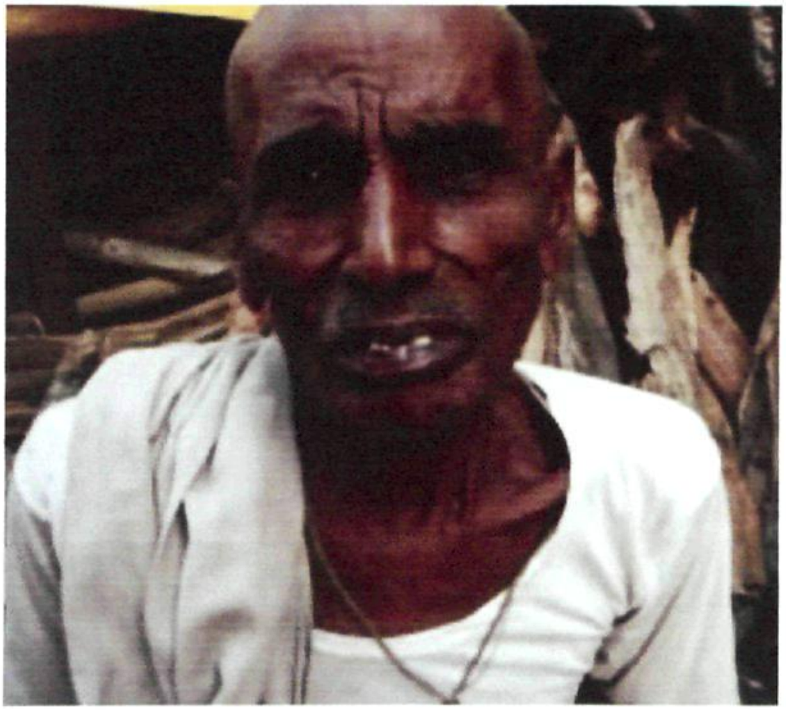

रसनचौकी के सबसे उम्रदराज व्यक्ति – श्री सिंहेसर दास 85 वर्ष, भुतहा बाज़ार मधुबनी

रसनचौकी के सबसे उम्रदराज व्यक्ति – श्री बालक राम उम्र -90 वर्ष, ग्राम-सिजौल, मधुबनी

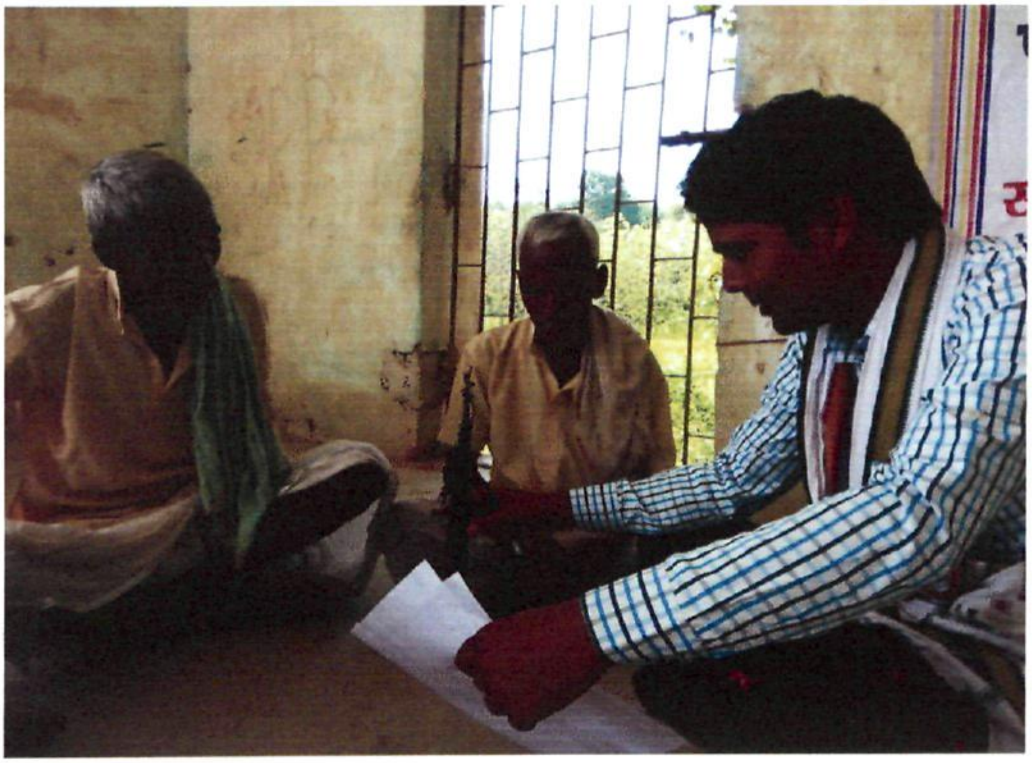

रसनचौकी वादन सीखते समुदाय का एक युवा

रसनचौकी वाद्य चलते हुए भी बचाया जाता है

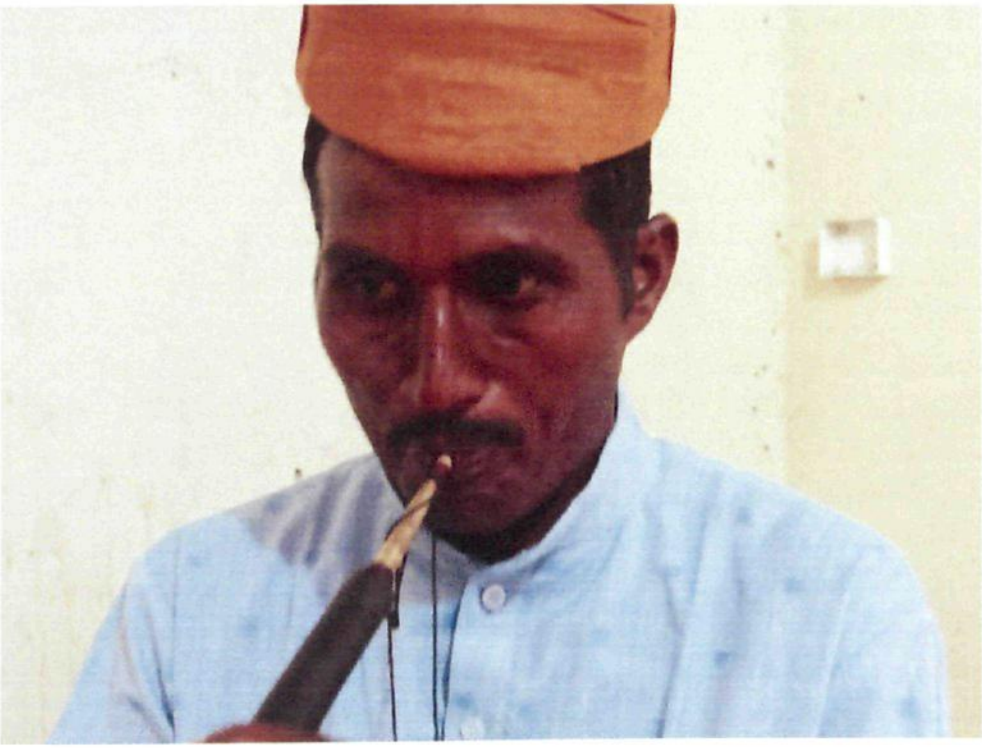

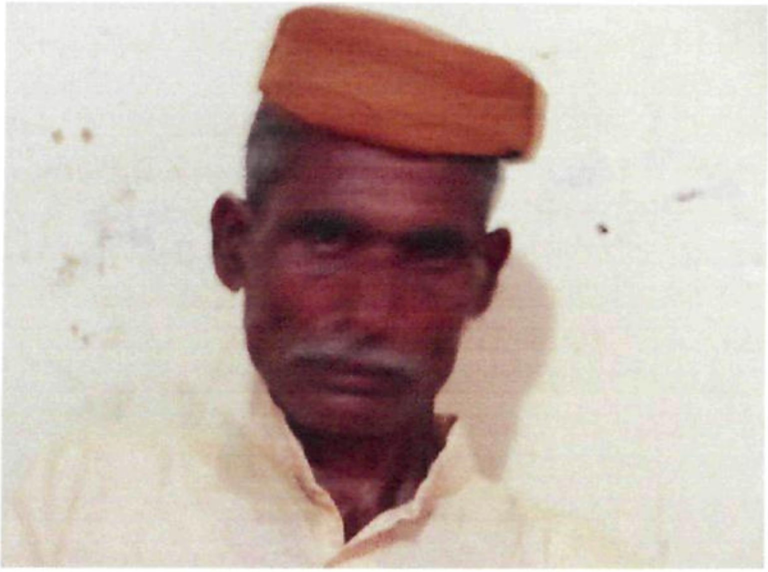

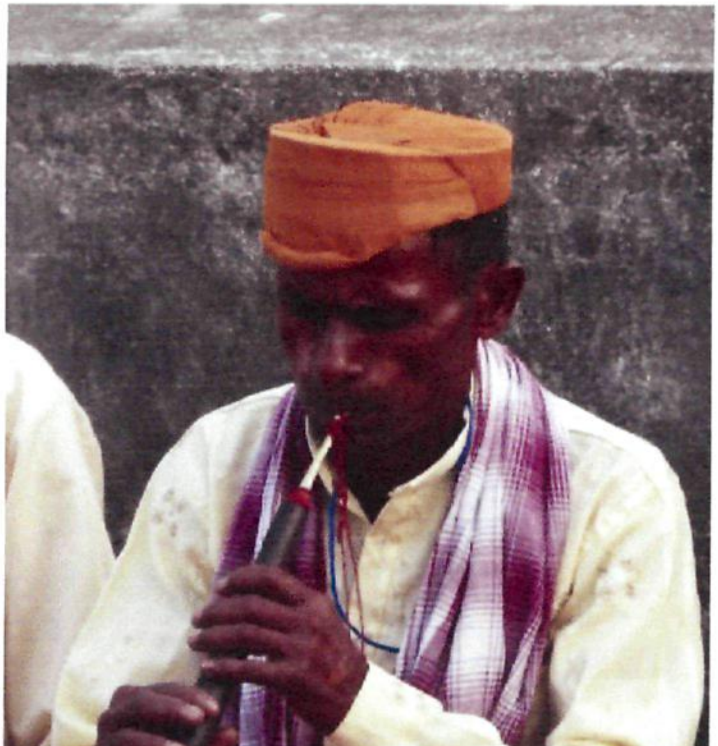

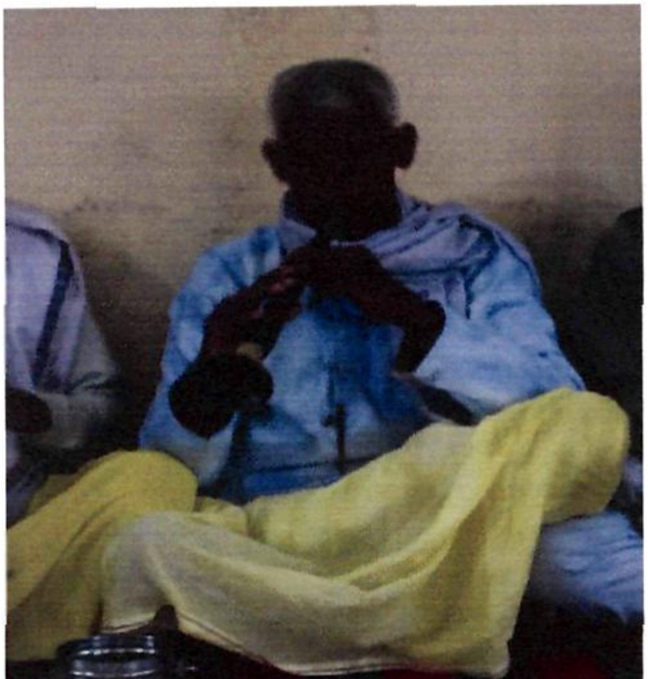

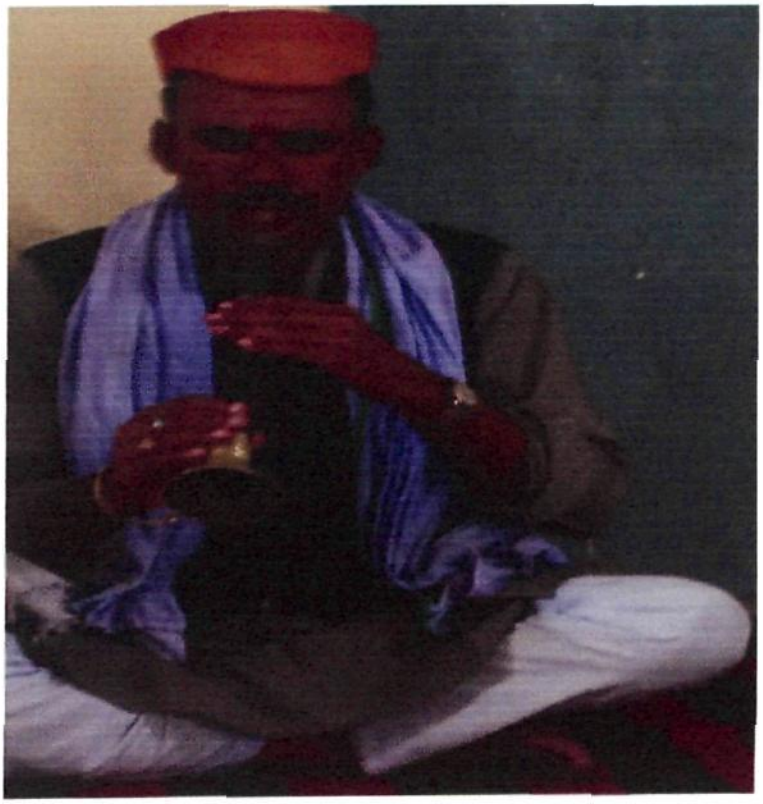

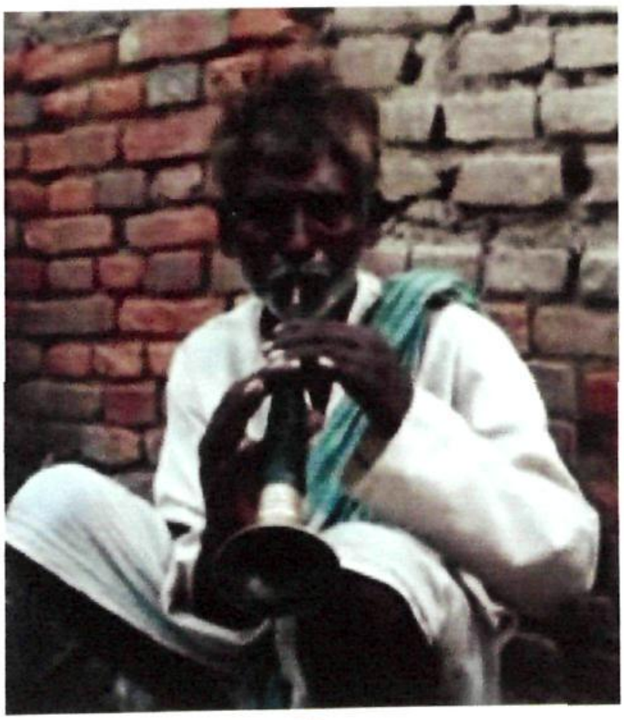

तृतीय राष्ट्रीय प्रयास नाट्य मेला
2014
20.11.2014
"रंगकर्मी" कोलकत्ता
"रोज़ाना"
21.11.2014
"देवन मिसिर"
2
0
1

पारिवारिक अनुष्ठानीक उत्सव पर रसनचौकी

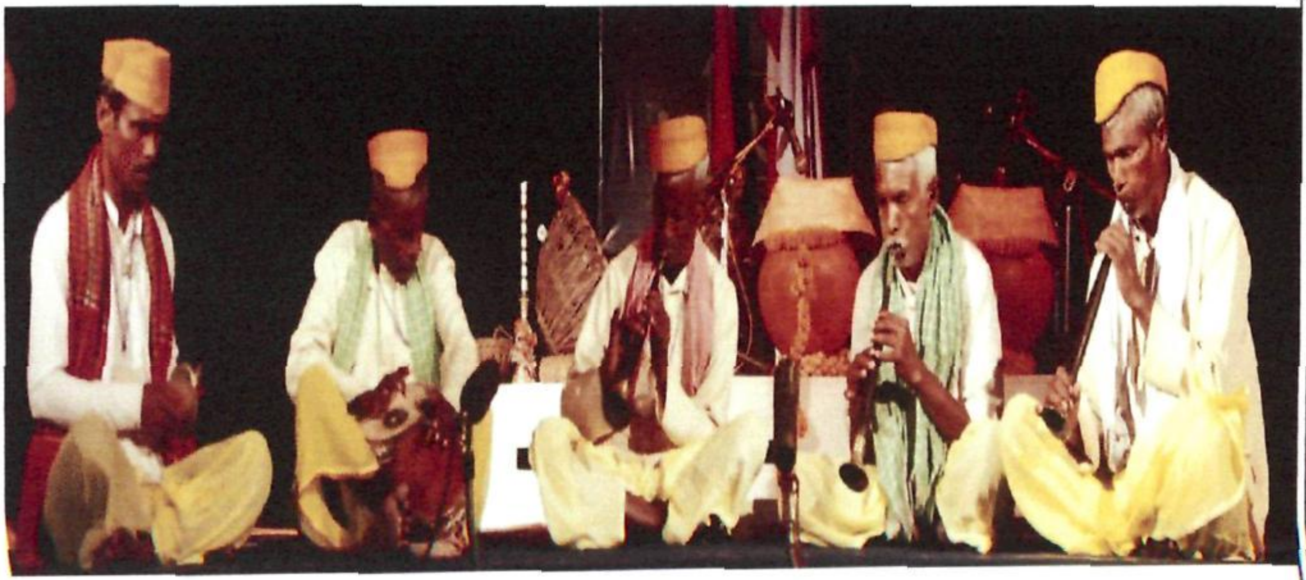

मंच पर रसनचौकी वादन

पारिवारिक अनुष्ठानीक उत्सव पर ढ़ोल पिपही वादन

<u>ग्रामीण मंच पर रसनचौकी</u>

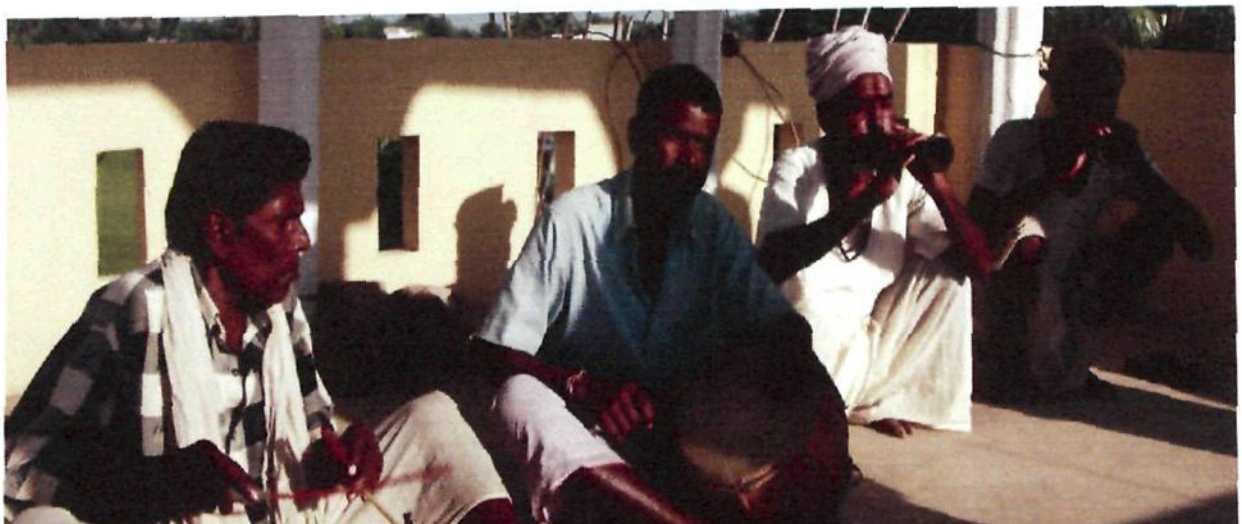

दुर्गा पूजा के अवसर पर ढ़ोल पिपही बजाते हुए कलाकार, मधुबनी

मधुबनी के कलाकार कलाकार –जिन्होने रसनचौकी वादन सीखना शुरू किया है–

प्रस्तुति से पहले की तैयारी

दुखन राम

शनि राम

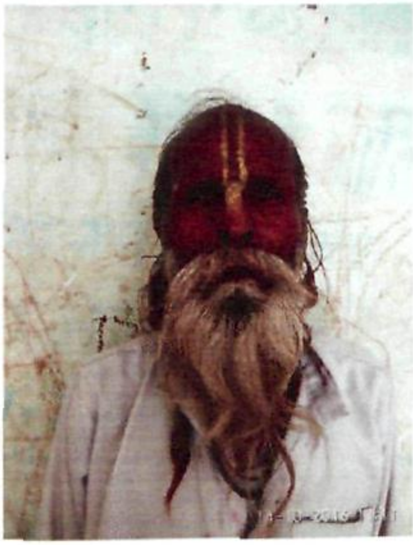

स्वरूप लाल राम

परमेसवर राम

टनटन पासावान

नुनू राम

मिथिला का लोक वाद्य - रसनचौकी के आकडा सृजन के दौरान कुछ तथ्य जो सामने आए :

- रसन चौकी वादय यंत्रों की उत्पति के बारे में उपरोकत गणमान्य व्यक्तियों का मानना है, कि हमारे पुर्वज लोग कहा करते थे, कि राजा महाराजाओं के यहाँ हम लोग इस वादय यंत्रों को सुनने जाया करते थे। वहाँ पर चर्चा होती थी कि राजा जनक व जानकी की कृपा से यह वादय यंत्र हम सबको सुनने और सिखने को मिला है। इससे यह ज्ञात किया जा सकता है कि इसकी उत्पति राजा जनक काल से ही हैं। कालान्तर में इसका विकास होता आया हैं। लगभग सभी कलाकारों मानना है कि यह हमारा पारंपरिक व्यवसाय है तथा हमारे पुर्वज इसी से सपरिवार का जीवन यापन किया करते थे। परन्तु वर्तमान में समय के बदलाव होने के कारण समाज में इसके प्रति आग्रह और आदर कम होने लगा है, जिससे हमारी आर्थिक स्थिति दयनीय होने लगी है। इसके अलावा ये लोगों को कोई और रोजगार तथा खेतीबारी करते हैं। आने वाले निकट भविष्य में हमारे बच्चे इसे मौलिक परंपरा को जिवित तथा चिरस्थायी रखने में कामयाब होंगे कि नहीं यह अनिश्चित है।

- पूर्व में राजा महाराज व ज़मीनदार के आवास जिसे डयौढ़ी भी कहते हैं, में पहले रसन चौकी वादकों को दुर दराज से सादर बुलाकर रसन चौकी वादन करवाया जाता था। धीरे धीरे ज़मीनदारी प्रथा खतम होने के कारण कलाकारों का आदर कम होने लगा है। वर्तमान में उस राज घराने के कुछ व्यक्ति सम्पुर्ण समाज के सहयोग से दुर्गा पुजा विधिवत रूप से मनाते हैं। जिसमें आवश्यक रूप से रसनचौकी वादन या रसनचौकी के आभाव में उसका दुसरा रूप खुरदक वादन करवाते है। यानी जो पहले नित्या कर्म था वह धीरे-धीरे समय विशेष तक सिमट गया।

- यह वाद्य मिथिला के हिन्दू धर्म के चमार (रविदास) जाति के लोग बजाते हैं।

- खुरदक तथा रसन चौकी वादय यंत्रों के बनावट में कुछ अन्तर होता है। खुर्दक बाजा को दुसरे अभ्रंष शब्दो में ढोल-पिपही कहा जाता है। इसमें मात्र तीन वादय यंत्र तथा चार वादय यंत्र होते हैं। परन्तु खासकर तीन वादय यंत्र ही बजाते हैं। दो पिपही तथा एक जोड़े रिद्यम होते हैं। उस दोनों पिपहीं में मात्र पॉच-पॉच छिद्र होते हैं। जिससे साधारण संगीत व गीतों की रचना की जाती है। यहॉ पुर्व में रसन चौकी वादन हुआ करता था, परन्तु स्थानीय कलाकारों का निधन हो जाने के कारण वर्तमान में खुरदक वादन होता है। वर्तमान वादय यंत्रों में दो पिपही और एक जोड़े रिद्यम वादय यंत्र होते हैं।

- कहीं – कहीं रिद्यम की बनावट- गुमकी- गोलाकार इम्फा के तरह या पहिये के रीम के तरह स्टील या पितल का बना होता है। और दोनो तरफ से बकरी के खाल (चमड़ा) से छाड़ते हैं। इसके दोनो बगल कपड़े के गद्दा लगाकर धरती पर रखकर बजाते हैं। एक हाथ में लकड़ी का एक छोटा गदा के अनुसार बना होता है, उससे बजाते हैं, और उलटे (बाये) हाथ से भी सहारा लेकर ताल पुरा करने हेतु बजाते हैं। रिद्यम-2 तासा-स्टील का कराहीनुमा बना होता है, उसे फाईवर प्लास्टिक से छाड़ते है। और दोनो हाथ में एक-एक लकड़ी लेकर बजाते हैं। फाईवर का इस्तेमाल इसलिए करते हैं, कि इसे बार-बार आग पर सेकने की जरूरत नहीं पड़ती है। जबकि टिमकी को हर एक आधा घंटा पर आग से सेकने की जरूरत पड़ती है। इस रिद्यम के स्टील वाले भाग में चारों तरफ नट-बोल्ट लगे होते हैं। जिससे कलाकार स्वर के माध्यम से तीव्र मध्य या मन्द्र के हिसाब से मिलाते हैं, और उचित रूप से बजाते है।

- इन कलाकारों का मानना है, कि वर्तमान में फाईवर प्लास्टिक से छाड़ते हैं, तो यह चमड़ा से सस्ता पड़ता है, और बार-बार आग में सेकने की जरूरत नहीं रहती है। मिट्टी का बना हुआ टिमकी का काम यह तासा-उर्फ तरिया करता है जिससे ताल बजाते हैं। और गद (सम) का काम गुमकी करता है। जिसे हम खुरदक में भठिया कहते हैं। इसी दोनों रिद्मम से ताल तथा सम का समन्वय समावेष करके संगीत के हिसाब से दादरा, कहरवा या अन्य ताल बजाते है। विषेषकर इसे लोक संगीत गायन में बजाते हैं। यह वादय यंत्र बिहार में खासकर मिथिला क्षेत्रों में लोक वादय यंत्र के नाम से जाने जाते हैं।

- ग्राम – चन्दौना, ज़िला – दरभंगा में रसनचौकी जाती की बाधा को बड़े पैमाने पर तोड़ चुकी है तथा यहाँ हिन्दू धर्म के आँय जाती के अलावे इस क्षेत्र के मुसलमानों ने भी रसनचौकी को अपनाया है और व्यावसायिक रूप से रसनचौकी बजाते है। ये बात अलग है की इस क्षेत्र में रसनचौकी वाद्य पर समय और सुविधा के अनुरूप कुछ अलग प्रकार केआर प्रयोग किए गए हैं। यहाँ ये लोक इस संगीत को अन्य लोक विधाओं जैसे - नाच, नाटक, घोड़ा नाच झरेलिया नाच, लौण्डा नाच आदि में भी भरपूर प्रयोग करते हैं।

- मिथिला के ऐतिहासिक गाँव राजा बलि गढ़, बाबुबरही, मधुबनी जिसका इतिहास राजा बलि से जुड़ा हुआ है में रसनचौकी के बारे में सबसे अलग सुनने को मिला। राजा बलि का गढ़ (किला) वर्तमान में मधुबनी जिलान्तर्गत बाबूबरही गाँव से (4) चार कि0 मी0 पुर्व में स्थित है। इस गाँव का नाम बलीराजगढ़ है। इसका क्षेत्रफल लगभग (100) सौ विघा में है। किला के बीच एक तालाब है, उस तालाब में रात के समय हुॅकार की

आवाज आती है। आर्कोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, भारत सरकार द्वारा किला की खुदाई कराया गया, जिसमें प्राचीन कालिक अदभुत वस्तुएं पाई गई है। जमीन के अन्दर राजा बलि के किले का छत भी पाया गया। उस पुण्य स्थल के निवासी कलाकारों से पता चलता है, कि, उस दरबार में भी उक्त वादय यंत्रों का वादन हुआ करता था। इस किले के उस ईंट की लम्बाई लगभग एक गज की है। यहॉ के कलाकारों का मानना है कि राजा बलि के किले में रसनचौकी वादन सुबह शाम होता ही था। हमारे पुर्वजों को इसी कार्य हेतु यहॉ जमीन देकर बसाया गया। वस्तुतः रसन चौकी की उत्पति रामायण काल से हीं मानी जा सकती हैं। राजा बलि को राजा जनक के दरबार से अभिन्न सम्बंध था। वैसे इन चर्चाओं में प्रामाणिक मतभिन्नता है जो एक अलग अनुसंधान का विषय हो सकता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि राजा जनक के दरबार से उत्पत्ति रसन चौकी वादन का अवलोकन कर राजा बलि भी अपने दरबार में करवाते थे। जिससे राजा बलि की शक्ति दैविक चमत्कारों से परिपुर्ण होता था।